डाक पंजीयन नं. 99/2021–23

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com website:www.aadhuniksamachar.com

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

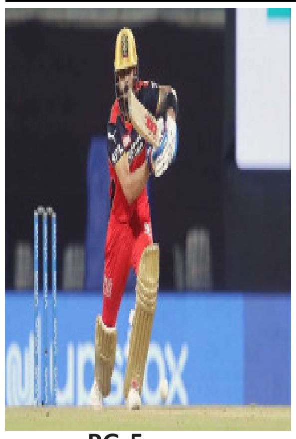

PG-5

आधुनिक समाचार

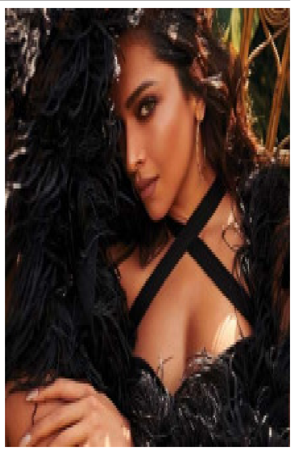

PG-5

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

सिनेमाः दीपिका पादुकोण को याद आया बचपन

वर्ष -08 अंक -37 प्रयागराज, मंगलवार 12 अप्रैल, 2022 पृष्ठ- 8 मूल्य : 2.00 रूपये

संक्षिप्त समाचार

पीएम मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडन की वर्चुअल बैठक आज

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सोमवार को अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के साथ आज आनलाइन बैठक करेंगे। इस दौरान दोनों नेता मौजूदा द्विपक्षीय सहयोग की समीक्षा करने के साथ ही दक्षिण एशिया, हिंद-प्रशांत के हालिया घटनाक्रम और पारस्परिक हित से जुड़े वैश्विक मुद्दों पर विचारों का आदान-प्रदान करेंगे। विदेश मंत्रालय ने रविवार को एक बयान में कहा कि वर्चुअल बैठक के जरिये दोनों पक्ष नियमित और उच्च स्तरीय संपर्क जारी रखेंगे। इसका मकसद द्विपक्षीय तथा वैश्विक रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करना है। दूसरी तरफ, व्हाइट हाउस की प्रवक्ता जेन साकी ने वाशिंगटन में कहा कि बैठक के दौरान दोनों देशों की सरकारों, अर्थव्यवस्था और आम लोगों के बीच संबंध बढ़ाने पर चर्चा की जाएगी। उन्होंने कहा कि बैठक में कई मुद्दे उठेंगे। इनमें कोविड महामारी का अंत, जलवायु संकट से निपटने, वैश्विक अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और हिंद-प्रशांत क्षेत्र की समृद्धि पर विचारों का आदान-प्रदान किया जाएगा।

असम राइफल्स को मिली बड़ी सफलता मिजोरम के चंफाई से हथियार किए बरामद

आइजोल। असम राइफल्स के सैनिकों को बड़ी सफलता मिली है। रविवार को भारत-म्यांमार सीमा के साथ मिजोरम के चंफाई जिले में सैनिकों ने ढेरों हथियार, हथगोले और जंगी सामान बरामद किए। असम राइफल्स के एक अभियान के तहत यह कामयाबी मिली है।? विशेष सूचना के आधार पर 23 सेक्टर असम राइफल्स की सेरछिप बटालियन की टुकडियों ने चम्फाई जिले के त्याओ कांव गांव के पास इस अभियान को अंजाम दिया गया।

पंजाब में भाजपा नेताओं के खिलाफ एफ आई आर पर परवेश वर्मा का बयान

नई दिल्ली। पंजाब में प्रचंड जीत हासिल करने के बाद आम आदमी पार्टी की राज्य में सरकार बन चुकी है। वहीं इस बीच पर पश्चिमी दिल्ली भारतीय जनता पार्टी के सांसद परवेश सिंह वर्मा ने रविवार को बड़ा आरोप लगाया है। उन्होंने कमिशन्र से मिलेंगे सांसद परवेश सिंह वर्मा ने कहा, 'आम आदमी पार्टी ने सिर्फ एक राज्य में सरकार बनाई है और उन्होंने पुलिस की शक्ति का दुरुपयोग करना शुरू कर दिया है।' उन्होंने आगे कहा, 'हमने इस बारे में बात करने के

पंजाब में भाजपा नेताओं के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने पर सीएम अरविंद केजरीवाल की खिंचाई की। साथ ही उन्होंने आम आदमी पार्टी को आड़े हाथों लिया। सांसद वर्मा ने कहा कि वैंझ् द्वारा पंजाब की पुलिस शक्ति का दुरूपयोग करने के बारे में, शिकायत करने के लिए जल्द ही गृह मंत्री और दिल्ली पुलिस लिए गृह मंत्री और दिल्ली पुलिस आयुक्त से समय मांगा है। पंजाब पुलिस लोगों को गिरफ्तार करने के लिए दूसरे राज्य में जाने से पहले दूसरे राज्यों की पुलिस को विश्वास में लेने के प्रोटोकाल का पालन नहीं करती है।' बता दें कि भाजपा महिला मोर्चा की नेता प्रीति गांधी ने जानकारी दी थी कि उन्हें एक ट्वीट पर पंजाब पुलिस की ओर से नोटिस भेजा गया है। वहीं भाजपा नेता तजिंदर पाल सिंह बग्गा के खिलाफ पंजाब में उनके सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर एफआइआर दर्ज की गई है। यही नहीं पंजाब पुलिस ने भाजपा दिल्ली के प्रवक्ता नवीन कुमार जिंदल के खिलाफ एक फर्जी वीडियो साझा करने के लिए प्राथमिकी दर्ज की थी। आपको बता दें कि यह सभी मामले भाजपा नेताओं द्वारा आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल पर हमलेवार सोशल मीडिया पोस्ट से जुड़े हुए थे, जिसपर भाजपा सांसद परवेश सिंह वर्मा ने दिल्ली के मुख्यमंत्री से संबंधित मामलों पर संज्ञान लेने के लिए पंजाब पुलिस के अधिकार क्षेत्र पर सवाल उठाया है। वर्मा ने कहा, 'नवीन और बग्गा केजरीवाल के बारे में बोल रहे हैं वह पंजाब के सीएम नहीं हैं, तो पंजाब पुलिस कार्रवाई क्यों कर रही है पश्चिमी दिल्ली के सांसद ने सवाल करते हुए कहा, 'कई राज्यों में भाजपा की सरकार है। कई लोग सोशल मीडिया पर हमारे खिलाफ कई बातें कहते हैं, हम उन पर केस नहीं करते हैं। क्या पंजाब पुलिस केवल सोशल मीडिया पोस्ट पर एफआइआर भरने का काम कर रही है।

शिक्षकों के खाली पदों को भरने में अब नहीं होगी देरी, शिक्षा मंत्रालय का उच्च शिक्षण संस्थानों को 31 अगस्त तक पद भरने के निर्देश

नई दिल्ली। देश के प्रमुख उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों का पद अब लंबे समय तक खाली नहीं

रहेगा। खाली होने से पहले ही उन पदों को भरने की प्रक्रिया शुरू करनी होगी। शिक्षकों के खाली पदों को भरने में देरी को लेकर कोई बहाना भी नहीं चलेगा। शिक्षा मंत्रालय ने इसको लेकर एक विस्तृत योजना बनाने का काम शुरू कर दिया है। हालांकि, इससे पहले केंद्रीय विश्वविद्यालयों सहित सभी केंद्रीय उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों के खाली पदों को मिशन मोड में भरने का निर्देश दिया है। इस काम को पूरा करने के लिए 31 अगस्त, 2022 तक की समय सीमा भी निर्धारित की है। ध्यान रहे कि हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सचिवों के साथ बैठक में सभी मंत्रालयों और विभागों में खाली पदों को भरने का निर्देश दिया था। उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षकों की कमी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अमल में एक बड़ी बाधा बन रही है। मंत्रालय ने इसको भांप कर पिछले साल ही केंद्रीय विश्वविद्यालयों में शिक्षकों के खाली पदों को भरने की मुहिम छेड़ी थी। खुद शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने देशभर के सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों के कुलपतियों से सीधी चर्चा की थी।

केंद्र की योजनाओं ने किसानों को बनाया सशक्त, पीएम मोदी बोले किसानों को ताकत दे रही हमारी सरकार

नई दिल्ली। फसल के मौसम और बैसाखी के पर्व से पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को कहा कि देश में 'प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि' और अन्य योजनाएं करोड़ों किसानों को नई ताकत दे रही हैं। पीएम मोदी ने रविवार को एक ट्वीट में किसानों के लिए केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं के लाभों का विवरण साझा करते हुए कहा लिखा कि सशक्त किसान एक समृद्ध राष्ट्र की कुंजी हैं। पीएम मोदी ने कहा कि देश को हमारे किसान भाइयों और बहनों पर गर्व है। देश में किसानों को और सशक्त बनाया जाए तो नया भारत और समृद्ध होगा। मुझे खुशी है कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि और कृषि से संबंधित अन्य योजनाएं देश के करोड़ों किसानों को नई ताकत दे रही हैं। दरअसल, प्रधानमंत्री मोदी ने ट्वीट कर जानकारी दी है कि देश में 11.3 करोड़ किसानों को योजनाओं से सीधे लाभ हुआ है, जिसमें 1.82 लाख करोड़ रुपये सीधे उनके खाते में स्थानांतरित

किए गए हैं। इसके अलावा पीएम किसान सम्मान निधि के तहत किसानों को 6,000 रुपये की वार्षिक मदद मिली है। जबकि 1.30 लाख करोड़ रुपये की राशि ण्ध्न्क्ष्-महामारी के दौरान हस्तांतरित की गई है। इसका लाभ विशेष रूप से छोटे किसानों तक पहुंचा है। केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल द्वारा फरवरी 2019 में पेश किए गए भारत सरकार के अंतरिम केंद्रीय बजट में प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि की घोषणा की गई थी। जिसमें सभी किसानों को न्यूनतम आय सहायता के रूप में प्रति वर्ष 6,000 रुपये तक मिलेंगे। इस बीच, कृषि अवसंरचना कोष के तहत कृषि संबंधी बुनियादी ढांचे के विकास के लिए 1 लाख करोड़ की ऋण सुविधा प्रदान की गई है। इनमें 11,632 परियोजनाओं के लिए 8,585 करोड़ रुपये के ऋण की स्वीकृति दी गई है। इसके अलावा पीएम मोदी ने बताया कि 1.73 करोड़ किसानों ने ई-एनएएम प्लेटफार्म पर पंजीकरण कराया है। जिसने 1.87 लाख करोड़ रुपये का कारोबार किया है। राष्ट्रीय कृषि बाजार (ा-ैंश) भारत में कृषि वस्तुओं के लिए एक आनलाइन ट्रेडिंग प्लेटफार्म है। ई-मार्केट किसानों, व्यापारियों और खरीदारों को आनलाइन व्यापार की सुविधा प्रदान करता है और बेहतर कीमत दिलाने में मदद करता है। साथ ही उपज के सुचारू विपणन के लिए सुविधाएं प्रदान करता है।

उत्तर भारत में भीषण गर्मी व लू का कहर, दिल्ली में अलर्ट जारी, जानें- अपने राज्य के मौसम का हाल

नई दिल्ली। उत्तर भारत के ज्यादातर राज्यों में दिन के समय तेज धूप जैसे आसमान से आग बरसा रही है। बढ़ते तापमान के साथ लू के थपेड़ों से लोग परेशान

हैं। मौसम विभाग ने देश के कई राज्यों में लू (हीट वेव) की चेतावनी दी है। आईएमडी के मुताबिक, राजस्थान, पंजाब के कुछ हिस्सों, हरियाणा, दिल्ली, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़ और पश्चिमी मध्य प्रदेश के अधिकांश हिस्सों में भीषण लू चलने की संभावना है। राजधानी दिल्ली में गर्मी के चलते मौसम विभाग ने 'येलो' अलर्ट जारी किया है। दिल्ली के कई जगहों पर हीटवेव कंडीशन और बहुत से इलाकों में सीवियर हीटवेव कंडीशन की भविष्यवाणी की गई है। दिन के समय आज दिल्ली का न्यूनतम तापमान 23 डिग्री सेल्सियस रहने की उम्मीद है, जबकि अधिकतम तापमान 42 डिग्री सेल्सियस रह सकता ह पहाड़ी इलाकों की बात की जाये तो मौसम विभाग ने उत्तराखंड में फिर मौसम बदलने की संभावना जताई है। पश्चिमी विक्षोभ के चलते अगले कुछ दिनों में यहां बारिश हो सकती है। जिसके चलते तापमान में कुछ कमी आ सकती है। उत्तराखंड की राजधानी देहरादून का न्यूनतम तापमान 19 डिग्री सेल्सियस और अधिकतम तापमान 39 डिग्री सेल्सियस रहेगा। वहीं हिमाचल प्रदेश के शिमला का न्यूनतम तापमान 18 डिग्री सेल्सियस रहने वाला है और अधिकतम तापमान 28 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। दक्षिण-पश्चिम बंगाल की खाड़ी के ऊपर बना चक्रवाती हवाओं का एक क्षेत्र बना हुआ है। उधर, विदर्भ से दक्षिण आंतरिक कर्नाटक तक एक निम्न दबाव की रेखा मराठवाडा और उत्तरी आंतरिक कर्नाटका होकर गुजर रही है। मौसम विभाग के अनुसार 12 अप्रैल की रात तक पश्चिमी हिमालय के पास एक नया पश्चिमी विक्षोभ आने की संभावना है। इसके असर से असर से उत्तर पश्चिम भारत के कई हिस्सों में अधिकतम तापमान में 2-3 डिग्री सेल्सियस की गिरावट आने की संभावना है। उत्तराखंड में गर्मी की मार से जनजीवन प्रभावित है। अधिकतम तापमान में चार से छह डिग्री सेल्सियस तक उछाल के चलते दिन में गर्मी ने लोगों को परेशान किया हुआ है। मौसम विज्ञान केंद्र के निदेशक बिक्रम सिंह के मुताबिक, मंगलवार शाम तक तापमान में सामान्य से अत्यंत अधिक वृद्धि की आशंका है। इससे मैदानों में भीषण गर्मी महसूस की जा सकती है। उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग, चमोली, टिहरी, पिथौरागढ़, अल्मोड़ा, बागेश्वर, नैनीताल, चंपावत में संवेदनशील इलाकों में विशेष सतर्कता बरतने की सलाह दी गई है। हालांकि, यहां हल्की बौछार भी पड़ सकती है। 13 व 14 अप्रैल को कहीं-कहीं ओलावृष्टि व बारिश हो सकती है। हिमाचल प्रदेश में शनिवार रात को मंडी, कुल्लू और शिमला जिले के कुछ स्थानों पर ओलावृष्टि व तेज हवाएं चलने से गर्मी से थोड़ी राहत मिली। इससे फसलों को नुकसान पहुंचा है। रविवार को प्रदेश के अधिकतर स्थानों पर धूप खिली है। मौसम विभाग ने प्रदेश में 12 अप्रैल से बारिश की संभावना जताई है। विभाग के निदेशक सुरेंद्र पाल का कहना है कि बहुत ही मामूली पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होने से कई स्थानों में आंधी चलने के साथ हल्की बारिश हुई।

कर्नाटक के मुख्यमंत्री ने 161 फुट ऊंची हनुमान जी की प्रतिमा का किया अनावरण, कहा- राज्य के लिए आने वाला है अच्छा समय

तुमकुरु। कर्नाटक के मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई ने रविवार को तुमकुर जिले के बिदानगेरे गांव में 161 फुट ऊंची पंचमुखी हनुमान जी की प्रतिमा का अनावरण किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि राज्य के लिए अच्छा समय आने वाला है। बोम्मई ने कहा कि रामनवमी के शुभ अवसर पर क्षेत्र में कई पवित्र कार्य किए जा रहे हैं। आने वाले दिनों में इस क्षेत्र में भारी विकास देखने को मिलेगा। कार्यक्रम के दौरान सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि पंचमुखी हनुमान का एक विशेष रूप है, जिसका रामायण में उल्लेख है। हनुमान ने दुनिया के कल्याण के लिए यह रूप लिया है। यह उनकी दिव्य इच्छा रही कि कर्नाटक में उनकी 161 फीट ऊंची प्रतिमा स्थापित हो। मूर्तिकारों ने एक अद्भुत काम किया है। इस कार्यक्रम के बाद सीएम बोम्मई ने राज्य के कुछ अन्य जिलों में रामनवमी समारोह में भाग लिया। बता दें कि कर्नाटक में इन दिनों धार्मिक मुद्दों पर बहस तेज हो गई है। हिजाब विवाद के बाद राज्य में मस्जिदों के लाउडस्पीकर पर आपत्ति दर्ज कराई जा रही है।

भारत में पांच दिन बाद कोरोना के एक हजार से कम मामले, 24 घंटे में 861 नए केस

नई दिल्ली। भारत में कोरोना के मामलों में फिर गिरावट देखने को मिली है। पांच दिन बाद देश में कोरोना के एक हजार से कम मामले दर्ज किए गए हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि बीते 24 घंटे में कोरोना के 861 ने मामले सामने आए हैं। इससे पहले तीन अप्रैल को कोरोना के 913 और 4 अप्रैल को 795 मामले मिले थे। देश में अब तक कोरोना की 185.64 करोड़ से ज्यादा वैक्सीन दी जा चुकी हैं। 99.49 करोड़ से ज्यादा लोगों को पहली डोज लग चुकी है। वहीं, 83.84 से ज्यादा दूसरी खुराक दी जा चुकी है। लगभग सवा दो करोड़ प्रीकाशन डोज भी लग चुकी है।

इं0पुनीत अरोरा जी बने उ0प्र0 राज्य औद्योगिक संघ के मीडिया प्रभारी

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश राज्य औद्योगिक संघ ने द जर्नलिस्ट वेलफेयर एसोसिएशन के राष्ट्रीय महासचिव एवं आधुनिक समाचार दैनिक के संपादक इं0पुनीत अरोरा को मीडिया प्रभारी बनाया है। संघ के महासचिव मनीष शुक्ला निदेशक ओवरसीज फूड प्राइवेट लिमिटेड ने उन्हें पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई।इंजीनियर पुनीत अरोरा ने कहा कि वह संघ की मजबूती के लिए भरसक प्रयतन करेंगे।साथ ही औद्योगिक क्षेत्र एवं उद्योग के विकास में निश्चय ही कुछ नया करके दिखाने का प्रयतन करेंगे।उनके नए दायित्व पर द जर्नलिस्ट वेलफेयर एसोसिएशन उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष डॉ0रणजीत सिंह एवं महासचिव रचना त्रिवेदी ने उन्हें हार्दिक बधाई देते हुए आशा जताई है कि वह राज्य औद्योगिक संघ को एक नई दिशा और दशा देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करेंगे।

श्री राम जन्मोत्सव धर्मशभा एवं विशाल शोभा यात्रा का आयोजन कीया गया

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज । कार्यक्रम की सुरुआत कन्यापूजन एवं मर्यादा पुरशोत्तम श्री राम चंद्र जी की आरती से प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम में मुख्यतिथि के रूप में संत समाज से आचार्य श्री सैंडिल्य जितेंद्र महाराज जी एवं श्री नारायण दास जी महाराज की उपस्तिथि रही।मंच का संचालन श्री गंगाधर जी महाराज(प्रशांत जी) एवं रतन्‍श दुबे जी ने किया।इस दौरान मुख्यतिथीयो के स्वागत में कार्यक्रम के प्रमुख आयोजको भूपेन्द्र यादव जी ,गौतम पाल जी,सूरज सिंह जी ,अभिमन्यु पांडेय जी,आकाश सिंह जी,अनिकेत पांडेय जी ,मनिशंकर(प्रिन्स),अनुज तिवारी जी,रवि(रॉकी) जी,सुभम सिंह जी,सौरभ तिवारी जी,सौरभ जी,निखिल जी,सिद्धार्थ जी सभी ने मंच पर आकर अंगवस्त्र के साथ माल्यार्पण किया।रथ यात्रा प्रारम्भ होने से पूर्व कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री नारायणदास जी महाराज ने अपने वक्तव्य में श्री रामचंद्र जी की मर्यादा को उल्लेखित करते हुए सनातन धर्म की रक्षा पर ज़ोर दिया साथ में सभी कार्यक्रम के आयोजकों एवं हि?यु?वा के परिवार के साथ ज़िला अध्यक्ष अमित प्रताप सिंह जी एवं स्थानीय विधायक श्री पीयूष रंजन निषाद जी की उपस्तिथि एवं सहयोग के लिए धन्यवाद ज्ञापित किए हाथी ,घोड़ा,बैंड पार्टी,ऊँट,रथ चौकी, डीजे साउंड,के साथ दिव्य रथ यात्रा प्रारम्भ होकर मामा भांजा से गुजरते हुए सरंगापुर से मुड़ कर महेवा चौराहा से होते हुए पुनः कार्यक्रम स्थल पर पहुँचा अंत में रथ यात्रा में सामिल सभी भाइयों ने भंडारे में प्रसाद ग्रहण कर रथ यात्रा को सफल बनाया।

सय्यद इस्लाह अहमद उर्फ० बबलू को सभासद एसोसिएशन मंडल प्रभारी बनाया गया

(आधुनिक समाचार सेवा)

सरफराज अहमद

फूलपुर। सभासद एसोसिएशन उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष श्री नीरज इंसान की स्वीकृति से श्री इस्लाह अहमद उर्फ बबलू को सभासद नगर पंचायत फूलपुर उत्तर प्रदेश आपकी सामाजिक कार्य में सभासद एकजुटता के प्रति कुशल एवं संगठन को मजबूती प्रदान करना एवं अच्छा व्यवहार हेतु सभासद एसोसिएशन मंडल प्रभारी प्रयागराज मनोनीत किया जाता है एवं आपकी नियुक्ति इस आशा एवं उम्मीद के साथ किया गया है कि आप द्वारा पूर्व लगन एवं ईमानदारी एवं निष्ठा से सभासद एसोसिएशन उत्तर प्रदेश संविधान के अनुसार समाज व सभासद हित में अपने कार्य करेंगे

फलालेस एंड फियरलेस संस्थ ने आयोजित किया ईद मेला

(आधुनिक समाचार सेवा)

सरफराज अहमद

प्रयागराज करेली। फ्लावर्स एंड फीयरलेस संस्था की ओर

हुनरमंद महिलाओं की प्रतिभा को निखारने और जरूरतमंद महिलाओं की मदद के मकसद से आयोजित दो दिनी ईद मेला शनिवार से प्रारंभ हुआ,नुरुल्लाह रोड स्थित शगुन पैलेस में लगे मेले में तकरीबन 45 स्टाल सजाए गये। मेले में एक छत के नीचे तरह-तरह की जरूरत की चीजें देखकर महिलाएं ज्यादा उत्साहित रहीं, मेले में हर धर्म जाति के लोगों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया, मेले में करेली मीरापुर स्टैनली रोड, सिविल लाइंस ,अतरसुइया सहित शहर के कई क्षेत्रों से आई महिलाओं ने स्टाल लगाए थे संस्था अध्यक्ष असरा नवाज़ कि देख रेख में लगे मेले में शगुन पैलेस के ओनर शाहिद कमाल खान बबलू सहित कोमल श्रीवास्तव ,तूहीना द्विवेदी,फातिमा इकबाल,कुलसुम खान,नसरा सिद्दीकी, अतुल्या सिंह,काजमीन सिद्दीकी सहयोगीं रहीं।

रोडवेज बसों से पार्सल व कोरियर भेजना होगा आसान

प्रयागराज। रेलवे स्टेशन की तर्ज पर रोडवेज बस अड्डों पर भी कोरियर व पार्सल भेजने की जल्द सुविधा मिलेगी। यानी रोडवेज की बसों से कोरियर और पार्सल भेजना अब आसान हो जाएगा। जल्द ही आम जन को यह सुविधा मिलेगी। इसके लिए परिवहन विभाग एक पायलट प्रोजेक्ट पर काम कर रहा है। इसके तहत बस अड्डों पर लोगों को कोरियर और पार्सल भेजने की सुविधा मिलेगी। यह सुविधा शुरूआत में तो कुछ चुनिंदा स्टेशनों पर ही मिलेगी, लेकिन इसका सफलता के आधार पर छोटे बस अड्डों पर भी शुरू होगा।

एनएसयूआई ने मनाया 52 वां स्थापना दिवस

(आधुनिक समाचार सेवा)

प्रयागराज। भारतीय राष्ट्रीय छात्र संगठन एनएसयूआई 9 अप्रैल 1971 को इंदिरा गांधी जी ने छात्रों का मजबूत संगठन की नींव रखी जिससे छात्रो को एक ऐसा प्लेटफार्म मिलें जहां नेतृत्व कर सकें अपने हको अधिकारों की लड़ाई लड़ सकें वर्तमान में विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक छात्र संगठन के रूप में कार्यरत एनएसयूआई जो छात्रों के हर संघर्ष में उनके साथ सड़क से सदन तक लड़ाई लड़ती है। एनएसयूआई प्रयागराज के जिलाध्यक्ष अक्षय यादव क्रांतिवीर ने कहा कि एनएसयूआई कोरोना जैसे वैश्विक महामारी में अपने जान पर खेलते हुवे फंसे छात्रों, राहगीरों व वंचितों तक राशन सामग्री से लेकर ब्लड डोनेशन, ऑक्सीजन पहुचाने और हॉस्पिटल में बेड ,मास्क सेनेटाइजर इत्यादि में लगातार सेवारत रहने वाली एकमात्र छात्र संगठन रही है।छात्रो की

छात्रवृत्ति से लेकर उनकी फीस संबंधित व पठन पाठन समस्त सुविधाओं रोजगार इत्यादि पर लड़ती रही है लाठियां खाई है जेल और मुकदमे तक लादे गए लेकिन एनएसयूआई सदैव हर दम तक छात्रो के साथ बनी रहती आई है। स्थापना दिवस के मौके पर तमाम जगहों मलिन बस्तियों में बच्चो को किताब,कॉपी पेंसिल अनाथ आश्रम में बच्चों को ज़रूरत मंद सामग्री वितरण की गई तत्पश्चात पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं की एक बैठक गोष्ठी हुवी संगठन के आगामी कार्यों का निर्धारण हुवा और पिछली कमियों पर सुधार के लिए कमर भी कसी गईं। साथ ही सागर मौर्य,शमीम खान,विक्रमादित्य मौर्य इत्यादि लोग संगठन में सदस्यता भी लिए कार्यक्रम दौरान अक्षय यादव क्रांतिवीर,चंद्रशेखर अधिकारी,हरिकेश हैरी,धनंजय कुशवाहा,संजीव पाठक,नीतीश सिंह,रजत मिश्रा,अमित द्विवेदी,वैभव सिंह,आदर्श भदौरिया,सागर सोनकर,देवेंन्द्र सिंह,अमन गुप्ता,सौरभ द्विवेदी,वीरेन्द्र यादव,अरबाज खान इत्यादि लोग रहें।

मुख्यमंत्री आरोग्य मेला का शुभारंभ

(आधुनिक समाचार सेवा)

सरफराज अहमद

फूलपुर। प्रत्येक रविवार सुबह 10 बजे से अपराहन 4 बजे तक समस्त प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पर स्वास्थ्य कैंप लगाकर स्वास्थ्य परीक्षण, उपचार, गर्भावस्था एवं प्रसव कालीन परामर्श, कुपोषित बच्चों का चिन्हीकरण एवं उनके

उपचार हेतु समुचित कार्यवाही, बच्चों में डायरिया एवं निमोनिया, पूर्ण टीकाकरण, परामर्श आदि की सुविधाएं प्रदान करते हुए जन आरोग्य मेले का आयोजन होता है। मैलहन प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र पर बीती फरवरी 9/ 2/ 2022 को अंतिम मेले का आयोजन हुआ था। फिर चुनाव आचार संहिता के कारण बंद कर दिया गया था। आज रविवार को पुनः उक्त स्वास्थ्य मेला डॉक्टर विनोद पटेल के नेतृत्व में शुरू किया गया। जिसमें 35 मरीजों ने पंजीकरण कराया एवं दवाएं ली। हालांकि ग्रामीण इलाके का प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र होने के कारण दवाओं का टोटा भी रहता है। अधीक्षक सुनील पांडेय द्वारा अस्पताल परिसर की सफाई व्यवस्था हेतु पैसे ना देना, अस्पताल के सभी पंखे व बल्ब अर्सा से खराब पड़े होने, खिड़कियों के शीशे आदि टूटे होने की शिकायत आम रही। यहां पेयजल जैसी महत्वपूर्ण व्यवस्था कई वर्षों से मुंह चिढ़ा रही है। चिलचिलाती गर्मी में लोग दुकान पर पानी लेने जाते हैं। बताया जाता है। कि नए सीएमओ द्वारा आज तक यहां का निरीक्षण नहीं किया गया। आरोग्य मेले में महत्वपूर्ण त्यौहार रामनवमी होते हुए भी फार्मीसिस्ट अच्छेलाल पटेल, बीनू एएनएम, बीबी शुक्ला, मोहम्मद नसीम, आशा चंद्रकली, मीरा यादव, प्रभा पांडेय, नेहा वर्मा आदि लोग मौजूद रही।

प्रयागराज-लखनऊ हाईवे पर फाफामऊ में लगा भीषण जाम, चिलचिलाती धूप में परेशान हुए लोग

प्रयागराज। इन दिनों प्रयागराज से लखनऊ का सफर कष्टकारी हो गया है। प्रयागराज जिले के गंगापार स्थित फाफामऊ में अक्?सर जाम लग रहा है। जाम में फंसकर लोग परेशान हो रहे हैं। एक बार फिर यहां सोमवार की दोपहर में जाम लग गया। चिलचिलाती धूप में एक

किलोमीटर के दायरे में वाहनों की लंबी लाइन लग गई। बड़े वाहनों के साथ ही दो पहिया वाहन सवार भी जाम के झाम में फंसकर हलकान हुए। प्यास से लोगों का गला भी सूख रहा था। फाफामऊ के बाईपास के पास प्रयागराज लखनऊ राजमार्ग पर इन दिनों नमामि गंगे के तहत अडानी कंस्ट्रक्शन कंपनी की ओर से सीवर पाइप डालने का काम किया जा रहा है। काम प्रभावित न हो, इसके लिए बैरिकेडिंग कर आवागमन को वन वे कर दिया गया है। यहां का मार्ग संकरा होने के चलते अक्सर जाम लगता है अप्रैल महीने में दोपहर में सूर्य की किरणें आग उगल रही है। ऐसे में एक बार फिर जाम की समस्या सकरे मार्ग पर सोमवार की दोपहर में हो गई। दोपहर करीब एक बजे भीषण जाम लग गया। वन वे मार्ग होने के चलते दोपहिया और चार पहिया वाहन चालकों द्वारा जल्दबाजी और बे तरकीब ढंग से वाहन को निकालने को लेकर जाम फाफामऊ से लेकर शांतिपुरम कालोनी तक लग गया। जाम में फंसे लोग धूप और गर्मी से बिलबिला उठे। सबसे अधिक परेशानी स्कूली बच्चों और बीमार लोगों को हुई। पुलिस व्यवस्था लचर होने के चलते वाहन आगे नहीं बढ़ पा रहे थे। यातायात पुलिस और स्थानीय लोगों की मदद से मशक्कत के बाद जाम की समस्?या से राहत मिली। तब जाकर धीरे-धीरे वाहनों के पहिए रेंगने शुरू हुए। तब जाकर लोगों को राहत मिली।

नैनी औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, प्रयागराज

भारत सरकार की कौशल विकास योजना में अगस्त 2021 से प्रारम्भ हो रहे सत्र के लिए निम्नलिखित ट्रेडों में दाखिले के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित ट्रेड प्रवेश योग्यता तथा प्रस्तुत विभिन्न पाठ्यक्रमों की अवधि इस प्रकार है-

क0सं0	ट्रेड का नाम	ट्रेड की अवधि	योग्यता
1.	कोपा	1 वर्ष	12वीं पास
2.	फिटर	2 वर्ष	10वीं पास
3.	बेसिक कम्प्युटिंग	6 माह	साक्षर
4.	डाटा इंट्री ऑपरेटर	6 माह	10वीं पास
5.	फायर प्रिवेन्शन एण्ड इंडस्ट्रियल सेफ्टी	6 माह	8वीं पास
6.	सेक्योरिटी सर्विस	6 माह	8वीं पास
7.	कम्प्यूटर हार्डवेयर एण्ड एसेम्बली	1 वर्ष	10वीं पास
8.	सर्टिफिकेट इन कम्प्युटर एप्लीकेशन	1 वर्ष	10वीं पास
9.	इलेक्ट्रिकल टेक्निशियन्स	1 वर्ष	8वीं पास
10.	रेफरिजरेटर एण्ड एयर कन्डिसनिंग	1 वर्ष	8वीं पास
11.	योगा असिस्टेन्ट	1 वर्ष	10वीं पास
12.	वेल्डिंग टेक्नोलॉजी	1 वर्ष	8वीं पास
13.	कम्प्यूटर टीचर ट्रेनिंग कोर्स	1 वर्ष	10वीं पास

1.प्रमाण पत्रः- सफल प्रशिक्षणार्थियों को भारत सरकार द्वारा प्रमाणपत्र दिए जाते है, जो केंन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार के अधीनस्थ पद एवं सेवा में भर्ती के लिए मान्य है। **2.चयन की प्रक्रियाः-** इस वर्ष कोविड-19 महामारी के चलते सभी सीटों पर दाखिले पहले आओ-पहले पाओ के आधार पर किये जायेंगे। **3.आयु सीमाः-** उम्मीदवारों की आयु 1 अगस्त 2021 को न्यूनतम 14 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। **4.आवेदन कैसे करेः-** आवेदन फॉर्म संस्थान की वेबसाइट पर जाकर ऑनलाइन भरे जा सकते है तथा संस्थान के कार्यालय से निःशुल्क भी प्राप्त किया जा सकता है। **5.**आवेदन फॉर्म भरते समय पंजीकरण शुल्क रूपये 2665/- का भी देय होगा। **6.कक्षायें/उपस्थितिः-** छात्रों की उपस्थिति में दो भाग शामिल है- थ्योरी क्लास और ट्रेनिंग इस वर्ष कोविड-19 स्थिति के कारण सभी छात्र संस्थान द्वारा आयोजित ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेंगे तथा उसके लिए संस्थान में छात्रों की भौतिक उपस्थिती की अनिवार्यता नहीं है, जब तक कोविड-19 की वर्तमान स्थिति समाप्त नहीं हो जाती है। प्रशिक्षण के लिए छात्रो को प्रधानाचार्य की अनूमति के साथ, अपने सम्बंधित मूल स्थानों पर प्रशिक्षण पूरा करने की अनुमति है। परीक्षा के समय छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य होगी। **7.छात्रवृत्तिः-** दाखिले के उपरांत शुल्क प्रतिपूर्ति के लिए सभी ट्रेडों में आरक्षित श्रेणी के अभ्यर्थी, जिनके पास आय प्रमाण पत्र एवं सम्बन्धित दस्तावेज मौजूद हो वे सभी भारत सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं में आवेदन कर सकते है। **8.** अधिक जानकारी के लिए संस्थान की वेबसाइटः- **www.nainiiti.com** देखें। **9.दाखिले की अंतिम तिथिः-** 15 अप्रैल 2022

सम्पर्क सूत्र :- 0532-2695959, 9415608710, 9807278552, 9415608790

चीनी मिल में आसान हुई विद्युत उत्पादन की राह

अमिलो (आजमगढ़)। चीनी मिल सठियांव में एक बार फिर बिजली उत्पाद की राह आसान हो गई है। चार महीने बाद मिल प्रबंधन के प्रयास से राजस्थान से नया ट्रांसफार्मर शुक्रवार को मिल में करोड़ों रुपये की आय होती थी, लेकिन ट्रांसफार्मर जल जाने के कारण मात्र पांच मेगावाट ही बिजली का उत्पादन हो पा रहा था। उतनी बिजली से केवल चीनी मिल का ही संचालन हो पा रहा था। इस

पहुंच गया और उसे लगाने का भी काम शुरू हो गया है। आसपास गेहूं की कटाई के बाद बिजली का उत्पादन शुरू किया जाएगा। कारण कि अभी उत्पादन शुरू करने से अगर कहीं चिगारी निकली तो किसानों का नुकसान हो सकता है। सठियांव चीनी मिली में चीनी के साथ बिजली का उत्पादन होता था, लेकिन इसके लिए लगाया गया 18 मेगावाट का ट्रांसफार्मर चार महीने पहले जल गया था। चीनी मिल में कुल 15 मेगावट बिजली उत्पादन होता था, जिसमें 10 मेगावाट बिजली मुहम्मदाबाद ग्रिड को बेची जाती थी, जिससे समस्या को दैनिक जागरण ने अपने 31 जनवरी के अंक में 'चीनी मिल में विद्युत उत्पादन प्रभावित' शीर्षक से प्रकाशित किया था। समाचार प्रकाशित होने के बाद से ही लगातार मिल प्रबंधन इस प्रयास में था कि जला हुआ ट्रांसफर पुनः बदलकर नया ट्रांसफार्मर स्थापित किया जाए, ताकि बिजली का उत्पादन शुरू हो सके। मिल प्रबंधन के प्रयास यह काम संभव हुआ और राजस्थान से लाकर नया ट्रांसफार्मर लगाए जाने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई। जल्द ही नया ट्रांसफार्मर स्थापित कर बिजली का उत्पादन पूरी क्षमता से किया जाएगा।

नवरात्र : महा अष्टमी पर मंदिरों में उमड़ा आस्था का सैलाब

आजमगढ़ । चैत्र नवरात्र की महाअष्टमी के दिन शनिवार को देवी मंदिरों में आस्था का सैलाब दिखा।

दो दिन व्रत रखने वालों ने अष्टमी का व्रत रखा और मंदिरों में पहुंचकर दर्शन-पूजन कर मां से सुख-शांति का आशीर्वाद मांगा। इस दौरान घंटे-घड़ियाल की ध्वनि के बीच मां का जयकारा गूंजता रहा। भोर से ही शुरू हुआ दर्शन-पूजन का सिलसिला देर रात तक चलता रहा। अन्य दिनों की अपेक्षा अष्टमी पर भक्तों की अधिक भीड़ रही। ग्रामीण इलाकों से भी भक्त दर्शन-पूजन के लिए मंदिर पहुंचे। उधर, महिलाएं रामनवमी की तैयारी में जुटी रहीं। पर्व को देखते हुए बाजार गुलजार थे। फलाहार से लेकर किराना और पूजा सामग्री की दुकानों पर भीड़ रही। सड़क किनारे कलश बेचने वालों ने भी अपनी दुकान लगा रखी थी, तो नौमी पूजा के लिए महत्वपूर्ण चौराई का साग 80 रुपये किलो के भाव बिका। अष्टमी के दिन कलश स्थापना के साथ देवी को नया वस्त्र अर्पित करने की परंपरा के कारण साड़ी की दुकानों पर भी भीड़ देखी गई। चुनरी डिजाइन वाली साड़ी की अधिक मांग रही। ग्रामीण क्षेत्रों में ताड़ी स्थित परमज्योति धाम, पाल्हमेश्वरी धाम, निजामाबाद स्थित शीतला धाम, दुर्गा-शिव, राधे-कृष्ण साई मंदिर कोलघाट में भी भोर से ही श्रद्धालुओं की भीड़ दिखी।

अभी पुलिस कस्टडी में ही रहेगा अहमद मुर्तजा अब्बासी

गोरखपुर। गोरखनाथ मंदिर के सुरक्षाकमिन्यों पर हमला करने वाले अहमद मुर्तजा अब्बासी की कस्टडी 16 अप्रैल तक के लिए बढ़ा दी गई है। एटीएस की टीम पिछले एक सप्ताह से अहमद मुर्तजा अब्बासी को अपनी कस्टडी में लेकर पूछताछ कर रही है। विवेचना स्थानांतरित होने के बाद पांच अप्रैल को ही गोरखनाथ पुलिस ने मुर्तजा को कोर्ट में पेश कर पूछताछ के लिए कस्टडी रिमांड में मांगी थी।जिसे मंजूर करते हुए कोर्ट ने 11 अप्रैल की दोपहर दो बजे तक के लिए पुलिस कस्टडी रिमांड मंजूर की थी।पांच अप्रैल को मुकदमे की विवेचना एटीएस को ट्रांसफर हो गई जिसके बाद एटीएस उसे लेकर लखनऊ चली गिई।वहीं

आरोपित को लेकर टीम लखनऊ चली गई, जहां उससे पूछताछ हो रही है। उसे 11 अप्रैल को गोरखपुर में कोर्ट में पेश किया गया जहां से उसे पुलिस कस्टडी में भेज द?िया गया। तीन अप्रैल की देर शाम गोरखनाथ मंदिर की सुरक्षा में तैनात पीएसी के दो जवान पर मुर्तजा ने धारदार हथियार से हमला कर दिया था। गोरखनाथ थाने में उसके खिलाफ हत्या की कोशिश, सरकारी कार्य में बाधा डालने, सेवन सीएलए समेत कई गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज है। चार अप्रैल को पर मुर्तजा उसके माता-पिता व करीबियों से पूछताछ की जा रही है।पूछताछ में सामने आए तथ्य के आधार पर एटीएस मुर्तजा की कस्टडी रिमांड बढ़ाने की मांग कर सकती है।शुक्रवार को एटीएस की ओर से कस्टडी रिमांड बढ़ाने के लिए कोर्ट में अर्जी दी गई थी। अहमद मुर्तजा अब्बासी के बड़े पिता डा. खालिद अहमद अब्बासी रविवार की शाम को पुलिस कंट्रोल रूम के पास स्थित एटीएस कार्यालय में बयान दर्ज कराने पहुंचे। कार्यालय में मौजूद दारोगा व सिपाहियों ने बयान दर्ज करने से मना कर दिया। करीब 30 मिनट तक कार्यालय में रहने के बाद डा. अब्बासी घर लौट गए। एटीएस के उप निरीक्षक दिनेश कुमार पांडेय गोरखनाथ थाने में दर्ज हुए मुकदमे की विवेचना कर रहे हैं। शुक्रवार को विवेचक की ओर से मुर्तजा के बड़े पिता डा. खालिद अहमद अब्बासी को नोटिस भेजा गया कि तत्काल लखनऊ के नादरगंज स्थित एटीएस के मुख्यालय पहुंचकर अपना बयान दर्ज कराएं। अपने साथ आधार कार्ड, पहचान पत्र व निवास प्रमाण लेकर जाएं। आदेश की अवहेलना पर आपके विरुद्ध विधिक कार्रवाई होगी। अपनी उम्र 65 साल होने की जानकारी देते हुए डाक्टर खालिद अब्बासी लखनऊ की जगह गोरखपुर कार्यालय पर बयान दर्ज कराने शनिवार की रात में पहुंच गए, लेकिन उन्हें लौटा दिया गया। इसके बाद उन्होंने एटीएस के एडीजी व एसएसपी को ईमेल कर बताया कि उनकी उम्र 65 वर्ष है। कानून के मुताबिक वरिष्ठ नागरिक होने के नाते उनसे पूछताछ/बयान उसी जिले में दर्ज किया जाए। ई-मेल का जवाब न मिलने पर रविवार की शाम को वह दोबारा बयान दर्ज कराने दोबारा एटीएस के कार्यालय पहुंचे लेकिन उन्हें लौटा दिया गया। डा. खालिद अहमद अब्बासी का कहना है कि वह पहले दिन से ही पुलिस व एटीएस का सहयोग कर रहे हैं। दो अप्रैल से ही एटीएस की टीम रोज उनके आवास व कार्यालय पर आ रही है।

बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे राहुल सांकृत्यायन

आजमगढ़। महापंडित राहुल सांकृत्यायन की 129वीं जयंती शनिवार को मनाई गई। विभिनन संगठनों की तरफ से कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कलेक्ट्रेट स्थित उनकी प्रतिमा पर लोगों ने

माल्यार्पण कर पदयात्रा निकाली। इसके बाद मड़या स्थित केंद्र पर अध्यक्ष पंडित अमरनाथ तिवारी के आवास पर विचार गोष्ठी आयोजित हुई। समिति के महामंत्री प्रभुनारायण पांडेय प्रेमी ने कहा कि राहुल जी बहुआयामी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने अपनी कलम के माध्यम से किसान, गरीब, असहाय व अछूतों के लिए आवाज उठाई। समाज में व्याप्त दुश्वारियों का विरोध किया। वह 36 भाषाओं के प्रकांड विद्वान थे। पंडित अमरनाथ तिवारी ने बताया कि उनका जन्म 1893 में पंदहा उनके ननिहाल में हुआ। उनका पैतृक गांव कनैला एवं बचपन का नाम केदार नाथ पांडेय था। स्मृति केंद्र 40 वर्षों से जयंती समारोह का आयोजन कर रहा है। इस मौके पर पंडित सुभाष चंद्र तिवारी कुंदन, साहित्यकार संजय कुमार पांडेय, निशीथ रंजन तिवारी, भोला त्रिपाठी, संजय पुजारी, मनोज पांडेय, प्रदीप यादव, राजेश्वर सिंह, रवि जायसवाल, सुरेश सोनकर आदि मौजूद थे। रानी की सरायः राहुल सांकृत्यायन की जयंती पंदहा स्थित उनके जन्म स्थली पर मनाई गई। हर किसी ने उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण किया। पुस्तकालय सभागार में समाजवादी व्यवस्था के निर्माण में सामाजिक न्याय एवं समरसता की भूमिका विषय पर गोष्ठी हुई। हरिमंदिर पांडेय ने कहा कि राहुल और आंबेडकर सामाजिक न्याय और सद्भाव के लिए जो कार्य किया वह वर्तमान राजनीति में धूमिल होती जा रही है। जाति, धर्म की राजनीति करके सामाजिक ताने-बाने को ठेस पहुंचाई जा रही हैं। जितेंद्र हरि पांडेय ने कहा कि भाकपा नौ से चौदह अप्रैल तक इसे सामाजिक समरसता के रुप में मनाएगी। संयोजक राधेश्याम पाठक ने सभी के प्रति आभार जताया। इस मौके पर हरिगेन राम, राधेश्याम पाठक, अजय कुमार तिवारी, रामाश्रय यादव, चंद्रजीत प्रजापति, इंद्रमणि तिवारी, अमरजीत यादव आदि मौजूद थे।

उमस भरी गर्मी से जनमानस बेहाल

आजमगढ़ । चैत्र माह का दूसरा पखवाड़ा शुरू हुआ है, लेकिन अभी से ज्येष्ठ, वैशाख की गर्मी का अहसास होने लगा है। चंद कदम की दूरी तय करने के बाद ठंडे पानी से चेहरा धुलना विवशता बन गई

है।शनिवार को तो पुरुआ हवा चलने के कारण उमस भी बढ़ गई। उमस भरी गर्मी की वजह से आम जन पूरी तरह से बिलबिला रहे हैं। कहीं भी लोगों को राहत नहीं मिल रही है। पारा लगातार चढ़ता जा रहा है। शनिवार को गर्मी ने लोगों को बेचैन कर दिया। जरूरी काम से बाहर निकले लोग घर पहुंचते ही कूलर के सामने बैठ गए। चिलचिलाती धूप ने आम आदमी के जीवन की रफ्तार को रोक दिया है। धूप में ऐसा महसूस हो रहा है कि आसमान से अंगारे बरस रहे हैं। दस कदम धूप में चलना भी आसान नहीं लग रहा था। रोडवेज बसों से यात्रा भी भारी पड़ने लगी है, क्योंकि आसमान के नीचे खड़ी बसों में बैठने के बाद तवे की तरह गर्म लग रहा है। हालांकि, घरों से निकलने के पहले लोग अपने स्तर से बचाव का इंतजाम कर रहे है। टोपी, गमछा लेना नहीं भूल रहे हैं, लेकिन उससे बहुत फायदा नहीं हो रहा है। शनिवार को अधिकतम तापमान 41 डिग्री सेल्सियस, जबकि न्यूनतम तापमान 23 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया।

रेलवे ने आसान की गोरखपुर से मुंबई व हैदराबाद की राह, आठ समर स्पेशल ट्रेनों को दी मंजूरी

गोरखपुर। गोरखपुर से मुंबई, हैदराबाद व सियालदाह के लिए चलाई जा रही आठ समर स्पेशल ट्रेनों से यात्रियों को राहत मिली है। पूर्वोत्तर रेलवे प्रशासन ने गर्मी के दिनों में होने वाली भीड़ के मद्देनजर इन ट्रेनों का संचालन शुरू किया है। यात्रियों को कोविड-19 से बचाव के नियमों का पालन करना होगा। 01028 गोरखपुर-लोकमान्य तिलक टर्मिनस स्पेशल 02 जुलाई तक प्रत्येक सोमवार, मंगलवार, बृहस्पतिवार एवं रविवार को गोरखपुर से चलेगी। 01027 लोकमान्य तिलक टर्मिनस-गोरखपुर समर स्पेशल 30 जून तक प्रत्येक मंगलवार, बृहस्पतिवार, शनिवार एवं रविवार को लोकमान्य तिलक टर्मिनस से चलेगी। 02576 गोरखपुर-हैदराबाद समर स्पेशल 26 जून तक प्रत्येक रविवार को गोरखपुर से चलेगी। 02575 हैदराबाद-गोरखपुर समर स्पेशल 24 जून तक प्रत्येक शुक्रवार को हैदराबाद से चलेगी। 05053 गोरखपुर-बांद्रा टर्मिनस स्पेशल 24 जून तक प्रत्येक शुक्रवार को गोरखपुर से चलेगी।05054 बांद्रा टर्मिनस-गोरखपुर समर स्पेशल 16 अप्रैल से 25 जून तक प्रत्येक शनिवार को बांद्रा टर्मिनस से चलेगी। 03132 गोरखपुर-सियालदह समर स्पेशल 18 अप्रैल से 27 जून तक प्रत्येक सोमवार को गोरखपुर से चलेगी। 03131 सियालदह-गोरखपुर समर स्पेशल 17 अप्रैल से 26 जून तक प्रत्येक रविवार को सियालदह से चलेगी। अब सप्ताह में दो दिन चलेगी मैलानी-बिछिया स्पेशल ट्रेन : रेल प्रशासन ने 05319/05320 मैलानी-बिछिया-मैलानी स्पेशल पैसेंजर ट्रेन के संचलन दिवस एवं रेक संरचना में संशोधन किया है। अब यह ट्रेन 11 अप्रैल से सप्ताह में तीन दिन के स्थान पर दो दिन शनिवार एवं रविवार को चलाई जाएगी। यह अपने यात्रा मार्ग के सभी स्टेशनों पर रुकेगी।

गोरखपुर में उप निंबधक समेत 12 अधिकारियो कर्मचारियों पर भ्रष्टाचार का मुकदमा, एक गिरफ्तार

गोरखपुर। स्टांप एवं निबंधन (रजिस्ट्री) तथा संभागीय परिवहन कार्यालय (आरटीओ) में भ्रष्टाचार चरम पर है। बिना घूस लिए कोई

काम न होने की शिकायत के बाद करीब एक माह तक की गई जांच और स्टिंग में दोनों विभागों का सच सामने आया है। भ्रष्टाचार उजागर होने के बाद डीएम के आदेश पर नायब तहसीलदार सदर ने रविवार की रात उप निबंधक केके तिवारी समेत 12 अधिकारियों-कर्मचारियों व बाहरी व्यक्तियों के विरुद्ध कैंट और शाहपुर थाने में मुकदमा दर्ज कराया है। दोनों विभागों में अधिकारी और कर्मचारी दलालों के जरिए रिश्वत ले रहे थे। पुलिस ने देर रात एक आरोपित विजय मिश्र को गिरफ्तार कर लिया, जबकि उप निबंधक समेत अन्य की तलाश चल रही है। जिलाधिकारी विजय किरन आनंद को शिकायत मिली थी कि कलेक्ट्रेट परिसर स्थित रजिस्ट्री व चरगांवा में खुले संभागीय परिवहन कार्यालय में अधिकारी व कर्मचारी भ्रष्टाचार में लिप्त हैं। दोनों विभागों में घूस दिए बगैर कोई काम नहीं हो रहा है। डीएम ने दोनों विभागों में अपने सूत्रों के जरिए गोपनीय जांच कराई तो बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार की जानकारी हुई। इसके बाद उन्होंने स्टिंग आपरेशन की जिम्मेदारी तहसीलदार सदर को दी। तहसीलदार ने दलालों के साथ भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारी व कर्मचारियों को चिह्नित किया और उनका वीडियो बना लिया। प्रमाण मिलने के बाद डीएम ने मुकदमा दर्ज करने का आदेश दिया। रविवार को नायब तहसीलदार की तहरीर पर रजिस्ट्री विभाग के उप निबंधक केके तिवारी, विजय मिश्रा, अशोक उपाध्याय, जितेंद्र जायसवाल, राजेश्वर ङ्क्षसह के खिलाफ थाना कैंट जबकि आरटीओ में तैनात होमगार्ड अर्जुन, साइबर कैफे व वीडियो फुटेज में दिख रहे पांच अज्ञात लोगों के खिलाफ थाना शाहपुर में कूटरचित दस्तावेज तैयार कर जालसाजी करने व 7/13 भ्रष्टाचार अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज किया गया है। पुलिस की एक सीडी में स्टिंग की वीडियो दी गई है, जिसमें बाहरी व्यक्ति भी दिख रहे हैं। आरोपितों की तलाश में दबिश चल रही है।

धरा को हरियाली की चुनर ओढ़ाने के लिए लगेंगे 40 लाख पौधे

आजमगढ़। जिले की धरा हरियाली की चुनरी ओढ़ेगी। वन विभाग के साथ ही अन्य विभाग भी पौधारोपण को लेकर अभियान चलाएंगे। इसको लेकर तैयारी लगभग पूरी कर ली गई है। प्रशासन ने इस साल 39,63,572 पौधे लगाने का लक्ष्य रखा है। इसके लिए गांवों के सार्वजनिक स्थलों, गया है। पर्यावरण विभाग 247534, ग्राम विकास विभाग 2290960, राजस्व विभाग 260820, पंचायती राज विभाग 260820, आवास विकास विभाग 7000, औद्योगिक विकास 2520, नगर विकास 24640, लोक निर्माण 8400, जल शक्ति विभाग 8400, रेशम विभाग 23670, कृषि विभाग 439580, पशु

खेतों की मेड़ संग अधिकारी व कर्मचारी भी अपने कार्यालय परिसर को हरा-भरा बनाएंगे। इसके लिए वन विभाग की पौधशालाओं में पौधे तैयार किए जा रहे है। प्रदेश में वर्ष 2020-21 में पौधारोपण का लगभग इतना ही लक्ष्य रखा गया था। पौधारोपण अभियान के लिए जिले की 32 नर्सरियों में 65 लाख पौधे तैयार किए जा रहे हैं। इसमें अकेले वन विभाग 2 लाख 47 हजार 534 पौधे लगाएगा। अभियान के दौरान सार्वजनिक भूमि एवं निजी भूमि क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर पौधारोपण करने का प्रस्ताव रखा पालन विभाग 3920, सहकारिता विभाग 10360, उद्योग विभाग 6580, ऊर्जा विभाग 3080, माध्यमिक शिक्षा 8500, बेसिक शिक्षा विभाग 8500, उच्च शिक्षा 22260, स्वास्थ्य विभाग 8400, परिवहन विभाग 2660, रेलवे विभाग 12880, रक्षा विभाग 5600, उद्यान विभाग 288948, पुलिस विभाग 5600 पौधरोपण का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। पौधारोपण का लक्ष्य विभागवार निर्धारण कर दिया गया है। पौधों की सुरक्षा को लिए ट्री गार्ड बनाए जाएंगे। इसकी देखरेख की व्यवस्था की जाएगी।

रमजान शापिग और खेलकूद की जगह करें इबादत साकिब कासमी

सरायमीर (आजमगढ़)। रमजान के पावन माह में आमतौर पर देखा जाता है कि युवाओं में खेलकूद और महिलाओं में शापिग के प्रति रुचि रहती है, लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए। इन सबसे ज्यादा इबादत में दिलचस्पी लेने की जरूरत है। इस मुबारक महीने में एक काम खुदाबंदी कुरान पाक का नुजूल हुआ। इस महीने में शबे कदर जैसी अजीम रात है, जो हजार महीने से अफजल है। इस महीने में एक फर्ज का सवाब 70 गुना कर दिया जाता है। इस महीने में दिन का

रोजे की पाबंदी के साथ ही लड़ाई-झगड़े और गाली-गलौज से बचने की जरूरत है। सिर्फ भूखे-प्यासे रहने का नाम रोजा नहीं है। आज नौजवान माह रमजान की रात को क्रिकेट, वालीबाल के लिए सजा रहा है। अपना कीमती वक्त नफ्स के हवाले करके इबादत से दूरी अख्तियार कर रहा है। फर्ज नमाज और तरावीह के लिए मस्जिदें पुकार रही हैं।यह बातें मदरसा अरबिया इस्लामिया बैतूल उलूम सरायमीर के शिक्षक मौलाना मोहम्मद साकिब कासमी ने कही। नौजवानों को नसीहत दी कि रमजान पवित्र और बाबरकत महीना है, जिसका पहला अशरा रहमत, दूसरा आसरा मगफिरत और आखिरी अशरा आग से खलासी यानी जहन्नम की आग से निजात हासिल करने का है। रोजा फर्ज है और रात की तरावीह सुन्नत है। जो कोई सवाब की नियत से रमजान के रोजे रखे और तरावीह पढ़े वह अपने गुनाहों से निकल जाएगा। रसूल पाक सल्लुल्लाहो सल्लम इस मुबारक महीना में आम महीनों से ज्यादा इबादत फरमाते थे जितना हो सके रात को जगने का प्रयास करना चाहिए और मेहनत करते हुए इस धन्य महीने के गुण और आशीर्वाद का सदुपयोग करना चाहिए, क्योंकि इस धन्य महीने के आने पर अच्छाई, आशीर्वाद और दया के हजारों दरवाजे खोल दिए जाते हैं। शैतानों को कैद कर दिया जाता है, ताकि इंसान इबादत में मशगूल और गुनाहों से बच सकें।

दिन चढ़ते बढ़ गई मेले की रौनक, लोगों ने उठाया जमकर आनंद

बांसडीहरोड (बलिया)। रामनवमी के अवसर पर रविवार को शंकरपुर भगवती मंदिर पर विशाल मेला लगा। इसमें जबरदस्त उत्साह छाया रहा। सुबह से ही मंदिर में श्रद्धालुओं व मेला घूमने वालों की भीड़ जुटने लगी। दिन को देखते हुए पुलिस बल भी काफी चौकनन होकर सुरक्षा एवं शांति व्यवस्था में लगा रहा। इस दौरान सड़क पर काफी देर तक जाम की स्थिति बनी रही। मां भगवती के दर्शन के बाद मेला घूमने आने वालों ने मेले का जमकर आनंद उठाया।

चढ़ते-चढ़ते रौनक बढ़ती गई। मेले में सजने वाली पारंपरिक दुकानें आकर्षण का प्रमुख केंद्र रहीं। सिरफल की विभिन्न किस्मों की आवक ने मेले की रौनक बढ़ा दी। इसी के साथ चिड़िया, खरगोश, कबूतर, चूहों ने मेले में आए लोगों को काफी आकर्षित किया। मिट्टी के बर्तनों की दुकानें भी आकर्षित करती रहीं। श्रृंगार के सामानों की सजी दुकाने महिलाओं को अपनी ओर खींचती रहीं। इन दुकानों पर महिलाओं की खासी भीड़ रही। मेले की पारंपरिक मिठाई जलेबी ने भी अपनी मिठास से सभी का जायका बढ़ाया। भीड़ भये प्रकट कृपाला. रामनवमी के अवसर पर क्षेत्र के छोड़हर स्थित श्रीराम जानकी मंदिर में श्रीराम प्राकट्य उत्सव काफी धूमधाम से मनाया गया। मंदिर कमेटी की तरफ से इस उत्सव की कई दिनों से तैयारियां की जा रही थीं। एक दिन पूर्व से ही चल रहे रामचरित मानस के पाठ के संपन्न होते ही श्रीराम के प्राकट्य उत्सव की धूम मच गई। इस दौरान पूरे परिसर को तोरणों व रक्षा सूत्रों से सजाया गया था। मुख्य द्वार से लेकर अंदर तक मंदिर को काफी सुंदर ढंग से भगवान के जन्मोत्सव के लिए तैयार किया गया था।

चैत नवरात्र के नवमी के दिन वैष्णो मंदिर में किया गया भंडारे का आयोजन

(आधुनिक समाचार सेव)
अनिल कुमार अग्रहरि

डाला सोनभद्र। मां वैष्णो देवी मंदिर चैत नवरात्र के नवमी के दिन मां वैष्णो देवी मंदिर पर श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी दूर-दराज से आए श्रद्धालुओं ने मां के दरबार में माथा टेका और मां का आर्शीवाद प्राप्त किया। वही मंदिर के परिषर में फुल-माला व श्रृंगार खिलौना फोटो ग्राफी की दुकानें भी सजी हुई देखने को मिला सुरक्षा वहीं अग्रवाल धर्मार्थ सेवा समिति के द्वारा नौ कन्याओं को विधि विधान पूर्वक पूजन कर कन्याओं को भोजन करवाया गया और आयोजित भंडारे का शुभारंभ किया दूर दराज आए श्रद्धालुओं भंडारे का प्रसाद ग्रहण किया मां वैष्णो देवी के पुजारी मिथिलेश पांडेय ने बताया कि श्रद्धालुओं काफी संख्या में मां के दरबार में आकर मां का आर्शीवाद प्राप्त कर रहे हैं मां महालक्ष्मी देवी के पुजारी श्री कांत तिवारी ने कहा कि चैत नवरात्र में मां दुर्गा व श्री राम के जन्म को समर्पित त्योहार हैं नवरात्र अब समापन की ओर की है। मां दुर्गा के अलग-अलग नौ स्वरूपों की विधि-विधान से पूजा छोटे कुंवारी कन्याओं को भोजन करवाने का मान्यता है सुरक्षा व्यवस्था को लेकर प्रशासन भी मौजूद रहे।

एफपीओ से किसानों की संवर रही जिदगी

मीरजापुर । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश के छोटे किसानों को बाजार की बड़ी ताकत बनाने में जुटे हुए हैं। कृषक उत्पादक संगठन (एफपीओ) इसमें अहम भूमिका निभा रहा है। प्रधानमंत्री पहली बार एफपीओ का विचार लेकर आए तो किसी ने नहीं सोचा होगा कि क्रांतिकारी परिवर्तन होगा। वर्तमान में एफपीओ से किसानों की जिदगी संवर रही है। एफपीओ के चलते मिलने की संभावना है। उप कृषि उपनिदेशक डा. अशोक उपाध्याय ने बताया कि निर्यात की प्रक्रिया दिसंबर 2021 से चल रही थी, चूंकि 2016 के बाद वर्मी कंपोस्ट का यह भारत से पहला निर्यात है, ऐसे अवसर पर नवचेतना के निदेशक मंडल व सभी शेयरधारकों का मनोबल बढ़ा है। क्या है एफपीओ उप कृषि उपनिदेशक डा. अशोक उपाध्याय ने बताया कि कृषक

आज विध्य क्षेत्र क किसानों की आमदनी विदेशी मुद्रा डालर में होने लगी है। यह तो अभी शुरुआत है, जिले के अन्य उत्पाद के निर्यात के माध्यम से कृषि उद्यमिता को बढावा मिलेगा। जनपद के नवचेतना कृषक उत्पादक संघ सीखड़ की ही बात करें तो एफपीओ द्वारा बीते दिनों पहली बार 25 टन देसी गाय के गोबर से निर्मित वर्मी कंपोस्ट खाद को दक्षिण कोरिया ईस्ट एशिया में निर्यात के लिए भेजा। एक्सपोर्ट मैनेजर अरूण सिंह के अनुसार लगभग 11000 यूएसडी डालर उत्पाद के निर्यात की प्रक्रिया प्रारंभ हुई है। आगामी दिनों में साउथ कोरिया से वर्मी कंपोस्ट व अन्य उत्पाद की और बड़ा आर्डर उत्पादक संगठन (एफपीओ) संगठन होता है, जिसके सदस्य किसान होते हैं। एसपीओ के माध्यम से किसानों को तकनीकी, मार्केटिग, ऋण, प्रोसेसिग, सिचाई आदि जैसी सुविधाएं प्रदान की जाती है। योजना के तहत किसान ऋण भी ले सकते हैं। वर्जन एफपीओ से किसानों को नया बाजार मिल रहा है। इसके चलते किसानों को उनकी उपज का बेहतर दाम मिल रहा है। इससे सरकार की मंशानुरुप किसानों की आय दोगुनी हो रहा है। जनपद में अधिक से अधिक एफपीओ के गठन के लिए निर्देश दिया गया है। - श्रीलक्ष्मी वीएस, मुख्य विकास अधिकारी, मीरजापुर

दिनदहाड़े शिक्षक के घर से 30 हजार नकद व आभूषण उड़ाए

सोनभद्र। राबट्र्सगंज कोतवाली क्षेत्र के मधुपुर गांव में शनिवार की दोपहर चोरों ने एक बंद घर को खंगाल डाला। एक शिक्षक के घर में घुसकर 30 हजार रुपये नकद व करीब सवा लाख के आभूषण पर हाथ साफ कर लिया। विद्यालय से लौटने के बाद शिक्षक ने पुलिस को जानकारी दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने छानबीन की लेकिन कुछ पता नहीं चला। मधुपुर-नौगढ़ मार्ग पर शिक्षक विनोद कुमार का मकान है। मकान में वह अकेले रहते हैं। शनिवार की सुबह वह विद्यालय पढ़ाने चले गए। दोपहर बाद जब विद्यालय से लौटे और घर के मुख्य दरवाजे का ताला खोला तो देखा कि सारा सामान बिखरा हुआ था। आलमारी खुली हुई थी। आलमीरा का लाक टूटा हुआ था। शिक्षक विनोद कुमार ने बताया कि चोरों ने अलमारी के संदूक में रखा 30000 रुपये नकद चोरी कर लिया। जबकि संदूक में रखा सोने की एक सिकड़ी, मांगटीका, करधनी, अंगूठी, पायल, मीना, लवंग, टफ भी गायब है। उन्होंने फौरन डायल 112 पर फोन कर घटना की जानकारी दी। मौके पर डायल पुलिस के अलावा चौकी सुकृत पुलिस भी पहुंची। पुलिस ने आसपास के लोगों से पूछताछ की लेकिन कुछ पता नहीं चला। शिक्षक विनोद कुमार ने मामले से संबंधित तहरीर सुकृत चौकी पर दिया है।

श्री राम नवमी के उपलक्ष में निकाली गई शोभायात्रा

(आधुनिक समाचार सेव)
अनिल कुमार अग्रहरि

डाला सोनभद्र। चैत्र नवरात्रि की नवमी को जय माँ दुर्गा सेवा समिति के अध्यक्ष अमित मिश्रा के नेतृत्व में शोभा यात्रा निकाली गयी। जिसमें प्रदेश के समाज कल्याण, अनुसूचित जाति जनजाति राज्यमंत्री संजीव कुमार सामिल रहे। शोभा यात्रा का शुभारंभ किये दुर्गा माता रानी की पूजा अर्चना के साथ शुरू हुआ। शोभायात्रा जय मां दुर्गा सेवा समिति से शुरू होते हुए माँ वैष्णो शक्तिपीठ धाम बाड़ी से यात्रा लगभग तीन किमी की दूरी तय कर अचलेश्वर महादेव मंदिर पहुची। शोभा यात्रा में भगवान शिव, पार्वती, नन्दी समेत बड़ी संख्या में महिला, पुरूष, बच्चे भक्तजन सामिल रहे। नगर में पहली बार निकली शोभा यात्रा में सामिल लोगो का उत्साह देखने को मिला। इस दौरान शोभा यात्रा में पनन विश्वकर्मा, राकेश पटेल, रामधारी साहनी, अनिल कुमार अग्रहरि, शिव शंकर, मुकेश चौधरी, टाटा चौधरी, बबलू निषाद, डाला व्यापार मंडल अध्यक्ष मुकेश जैन नीरज द्विवेदी, गिरीश चन्द्र, धीरेन्द्र प्रताप, मुकेश जैन, नीरज द्विवेदी, संदीप सिंह पटेल, अनिकेत श्रीवास्तव, राम प्रसाद मिश्रा, अखिलेश पाण्डेय, प्रभाकर, सौरभ सिंह आदि लोग सामिल रहे। सुरक्षा के दौरान डाला चौकी इंचार्ज मनोज कुमार ठाकुर पुलिस बल के साथ मौजूद रहे

जिला पंचायत में कल खींचा जाएगा विकास का खाका

मीरजापुर । जिला पंचायत की बैठक में आगामी 12 अप्रैल को दोपहर 2.30 बजे जिले के विकास का खाका खींचा जाएगा। अपर मुख्य अधिकारी नीतू सिंह सिसौदिया ने बताया कि अध्यक्ष राजू कननैजिया बैठक की अध्यक्षता करेंगे। सबसे पहले पिछली बैठक के कार्रवाई की पुष्टि पर विचार होगा। पुनरीक्षित बजट वर्ष 2021-22 के अनुमोदन, मूल बजट वर्ष 2022-23 का अनुमोदन, विभव एवं सम्पत्ति कर सूची वर्ष 2021-22 के अनुमोदन, मनरेगा योजना के तहत श्रम बजट वित्तीय वर्ष 2022-23 के अनुमोदन पर विचार होगा। इसके साथ ही डाक टिकट की धनराशि दो हजार से बढ़ाकर पांच हजार करने के अनुमोदन पर भी चर्चा की जाएगी। बैठक में सदस्य लोकसभा, सदस्य राज्यसभा, सदस्य विधानसभा, सदस्य विधान परिषद, सदस्य जिला पंचायत, क्षेत्र पंचायत शामिल होंगे।

शिक्षा, स्वास्थ्य, जमीन, रोजगार पर चलेगा अभियान

म्योरपुर (सोनभद्र)। दुद्धी में शिक्षा, स्वास्थ्य, जमीन, रोजगार के अधिकार के लिए आइपीएफ अभियान चलायेगा। इस आशय का निणन्य शनिवार को आइपीएफ की रासपहरी कार्यालय पर हुई तहसील स्तरीय बैठक में लिया गया। प्रस्ताव में कहा गया कि पेट्रोल, डीजल के दामों में रोज हो रही वृद्धि और रसोई गैस के दामों में एक साथ 25 रुपये की वृद्धि ने आम आदमी की कमर तोड़ दी है। दवाओं के दामों में भी सरकार ने वृद्धि कर दी। वक्ताओं ने कहा कि दुद्धी में आदिवासी लड़कियों के लिए डिग्री कालेज, ब्लाक स्तर पर सरकारी इंटर कालेज, अस्पतालों में विशेषज्ञ डाक्टरों विशेषकर महिला डाक्टर की नियुक्ति करने, मनरेगा में रोजगार देने और वनाधिकार कानून के तहत पुश्तैनी वन भूमि पर अधिकार के लिए अभियान चलाने का निणन्य हुआ। अध्यक्षता जिला संयोजक कृपाशंकर पनिका ने और संचालन मंगरू प्रसाद श्याम ने किया। बैठक में दिनकर कपूर, राजेंद्र प्रसाद गोंड़, राम विचार गोंड़, रूबी प्रसाद गोंड़, रामदेव गोंड़, दलबीर खरवार, महावीर गोंड़, गुंजा गोंड़, सुगवंती गोंड़, सविता गोंड़, संतोषी गोंड़ आदि उपस्थित रहे।

दोहरीकरण के बाद 100 किमी प्रतिघंटा की गति से दौड़ेंगी ट्रेनें

ओबरा (सोनभद्र) । देश में सबसे ज्यादा कमाई करने वाले धनबाद रेल मंडल के गढ़वा-सिगरौली रेलखंड के दोहरीकरण का कार्य अंतिम दौर में है। गढ़वा से सिगरौली रेलखंड के बीच चल रहा दोहरीकरण काफी महत्वपूर्ण है। अभी तक सिगल ट्रैक होने के कारण इस रूट पर ट्रेनों का संचालन काफी सुस्त होने के साथ व्यस्तता भी काफी ज्यादा है। अभी इस सिगल लाइन पर 105 फीसद यातायात घनत्व है। इससे ट्रेनों में विलंब होता है। डबल ट्रैक होने पर ट्रेनों की संख्या बढ़ने के साथ गति में भी इजाफा होगा। दोहरीकरण की प्रक्रिया के पूरा होने के बाद इस मार्ग पर 100 किमी प्रतिघंटा की गति से ट्रेनें दौड़ सकेंगी। पिछले सप्ताह ही मिर्चाधुरी से मगरदहा के बीच दोहरीकरण का कार्य पूरा हुआ है। फिलहाल इस रेलखंड के 70 फीसद के करीब हिस्से का कार्य पूरा हो चुका है। दर्जन भर पुलों का निर्माण जारी है। इस रेलखंड के दोहरीकरण पूरा होने का सबसे ज्यादा लाभ नार्दर्न कोलफील्ड्स (एनसीएल) को मिलेगा। एनसीएल का कोयला इसी रेलखंड से ही तमाम परियोजनाओं में भेजा जाता है। बीते वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान एनसीएल ने 15.66 फीसद बड़ी वृद्धि के साथ रिकार्ड 125.66 मिलियन टन कोयला प्रेषित किया। पिछले वर्ष कोयला संकट ने बिजली संकट पैदा की थी। पिछले वित्त वर्ष के दौरान ही 17 फीसद वार्षिक वृद्धि के साथ 110.6 मिलियन टन कोयला बिजलीघरों को भेजा गया। छह फेज में इस रेलखंड के चल रहे आधुनिकीकरण से धनबाद रेल मंडल के राजस्व में भारी वृद्धि हो सकती है। धनबाद है सबसे ज्यादा कमाई वाला रेल मंडल सबसे ज्यादा राजस्व पैदा करने में धनबाद मंडल ने पूरे देश में अपनी बादशाहत कायम रखी है। मंडल ने वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान माल भाड़ा से 19522.89 करोड़ रुपए राजस्व प्राप्त किया है। यह पिछले वित्त वर्ष 2020-21 से 30.17 फीसद अधिक है। धनबाद मंडल ने लोडिग में भी अपने पिछले प्रदर्शन को बेहतर किया है।

घोरी नहर लाइनिग कार्य में मानक की अनदेखी

लालगंज (मीरजापुर) । विभागीय लापरवाही के चलते लालगंज क्षेत्र में घोरी नहर के लाइनिग निर्माण कार्य में मानक की अनदेखी का आरोप लग रहा है। हालात यह है कि लाइनिग कार्य इस चिलचिलाती धूप में कराए जाने के बावजूद पानी कि तराई नहीं हो रही है। बोल्डर की चुनाई में बालू सीमेंट के रेसियो में भी मानक की अनदेखी की जा रही है। बालू का अधिक मात्रा और पानी की तराई नहीं किए जाने से सीमेंट बालू सूख कर कमजोर हो रहा है। क्षेत्र के किसानों की सुविधा के लिए पानी की तरह रुपये बहाए जा रहे हैं जो कि पानी में ही बह रह जा रहा है। हैरत की बात तो यह है कि जानकारी के बाद भी विभागीय अधिकारियों ने इसकी सुधि नहीं ली है। ग्रामीणों ने लाइनिग कार्य की टीएसी से जांच कराने की मांग की है। नहरों का पानी बर्बाद न हो और किसानों को समय से सिचाई के लिए पानी मिल सके, इसके लिए नहरों और माइनरों में लाइनिग कार्य किया जाना है। इसी के तहत घोरी बांध से निकली प्रमुख नहर में पचोखर गांव के पास लाइनिग किया जा रहा है, लेकिन क्षेत्र के किसानो की माने तो यह योजना सिचाई विभाग के अधिकारियों और ठेकेदारों की मिलीभगत से भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गई है। क्षेत्र के शिवपूजन, लालबहादुर सिंह, विपिन दुबे आदि किसानों ने बताया कि लाइनिग के कार्य में भ्रष्टाचार इस कदर हावी रहा कि आगे आगे लाइनिग कार्य हो तो रहे है और पीछे से मानक के अनदेखी के कारण लाइनिग कमजोर होती रही बालू सीमेंट की पकड़ कमजोर पड़ रही। बताया कि लाइनिग निर्माण में बालू की जगह घटिया डस्ट डाली गई और सीमेंट के नाम पर राख वाली सीमेंट का प्रयोग किया जा रहा है। अच्छे सीमेंट का नाम मात्र के लिए प्रयोग किया जा रहा है। ग्रामीणों ने डीएम से नहर निर्माण कार्य की जांच कराने की मांग की। वर्जन नहर की मरम्मत मानक के अनुसार करने के निर्देश दिए गए है, कही कमी मिलने पर इसकी जांचक कराकर कार्रवाई की जाएगी। मोहम्मद नसीम सिददीकी सहायक अभियंता सिरसी बांध प्रखंड द्वितीय डिवीजन

पोखरे से अवैध तरीके से मोरम व मिट्टी का खनन

राजगढ़ (मीरजापुर)। क्षेत्र के धनसीरिया ग्राम सभा में स्थित पोखरे से अवैध तरीके से मोरम व मिट्टी खनन एवं परिवहन धड़ल्ले से किया जा रहा है। पिछले वर्ष भी इसी पोखरे से लाखों रुपये का मिट्टी व मोरम बेचा गया था। सरकार को लाखों रुपये का राजस्व का चूना लगाया जा रहा है। क्षेत्र के लोगों का आरोप है कि विभाग द्वारा कार्रवाई न होने के कारण अवैध खनन व परिवहन वालों के मनोबल बढ़े है। ग्रामीणों का आरोप है कि खनन माफियाओं द्वारा जेसीबी से मिट्टी की खोदाई कर रहे हैं और बाजारों में बेच रहे हैं, लेकिन गांव के लोग जब ग्राम प्रधान से तालाब या पोखरे की खोदाई करवाने की मांग करते हैं तो ग्राम प्रधान मना कर देते हैं और मिट्टी देने में असमर्थता जताते हैं। गांव में कोई भी कार्य ग्राम प्रधान और खंड विकास कार्यालय से किया जाता है, लेकिन जब पोखरे से अवैध रूप से मिट्टी निकाली जाती है तो ग्राम प्रधान और बीडीओ पल्ला झाड़ ले रहे हैं। ग्राम प्रधान धनसिरिया जन्मेजय ने बताया कि इस बारे में मुझे कोई जानकारी नहीं है। इस संबंध में खंड विकास अधिकारी शैलेंद्र सिंह ने बताया कि हमारे ब्लॉक का मामला नहीं है, यह राजस्व का मामला है।

नवरात्र के अंतिम दिन जवारी का हुआ विसर्जन

अनपरा (सोनभद्र) । ऊर्जांचल स्थित ग्रामीण अंचलों में चैत्र नवरात्र के अंतिम बेला पर रविवार की सुबह नर-नारियों ने जवारी यात्रा निकाल गांव के डीहबाबा व देव स्थलों की परिक्रमा कर विधि-विधान से पूजन कर उसे विसर्जित किया। विदित हो कि क्षेत्र के ग्रामीण इलाकों में श्रद्धालु नवरात्र के प्रथम तिथि को जौ के साथ कलश स्थापित करते हैं। पूरे नवरात्र सुबह-शाम मां भगवती की चरणों में अपनी अरज-गरज लगाते हुए सविधि पूजा करते है। नवरात्रि के अंतिम दिन सभी श्रद्धालु अपने घरों में स्थापित की गयी जवारी व कलश को निकाल कर एक समूह में ढोल-मजीरे के थाप पर देवी गीत गाते हुए देव स्थलों पर जाते हैं। जहां पर देवी को खुश करने के लिए तमाम गीतों के माध्यम से अपनी स्वरांजली अर्पित करते हैं। इस बीच कुछ ग्रामीण देवी भक्ति गीत में इस कदर लीन हो जाते हैं कि मानों उन पर देवी सवार हो गई हैं। वे तलवार, त्रिशूल, सीकड़ आदि से अजीबोगरीब करतब दिखाते हैं। देवी-देवताओं के पूजन के बाद ग्रामीण समूह में जवारी लेकर सभी घरों मे जाते है। जहां पर देवी के चरणों में डीहवा से देवी उमही चलील बाय, अब केकरे घरे जाय हो माय तथा सुर देह सुर देह मोर सुरसतिया आदि देवी गीतों की अरज लगाकर उस घर की सुख समृद्धि की कामना करतें है। ज्वालामुखी मंदिर में तमाम ग्रामीण आदिवासी जवारी यात्रा लेकर पहुंवे। हाथ में खप्पर एवं उनका पारंपरिक भेषभूषा आकर्षण का केंद्र रहा। तमाम श्रद्धालु त्रिशुल से अपने शरीर का छेदन किया। उनके आस्था व श्रद्धाभाव को देखने के लिए लोग उनके पिछे मंडराते रहे।

भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान व राष्ट्रीय बीज निगम के बीच समझौता

सीखड़ (मीरजापुर) । सब्जियों पर शोध करने वाली देश के प्रमुख शोध संस्थान द्वारा सब्जियों की विभिन्न प्रजातियों के बीजों को राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्ध कराने के लिए संस्थान के निदेशक डा. टीके बेहेरा एवं राष्ट्रीय बीज निगम की सहायक कंपनी सचिव आयुषी ने अनुबंध पत्र पर हस्ताक्षर किए। भारतीय सब्जी अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित सब्जी के किस्मों के बीज का उत्पादन किया जाएगा। इसके बाद अभिजनक बीज राष्ट्रीय बीज निगम को संस्थान द्वारा उपलब्ध कराया जाएगा। इससे सब्जी की विभिन्न किस्मों का गुणवक्ता युक्त बीज उचित मूल्य पर उपलब्ध हो सके। निदेशक ने बताया कि संस्थान द्वारा 125 से ज्यादा प्रजातियां एवं संकर किस्मों का विकास विभिन्न सब्जियों में किया जा चुका है। इस दौरान संस्थान के विभागाध्यक्ष (फसल सुरक्षा) डा. केके पांडेय, राष्ट्रीय बीज निगम के जीवी मोहन, डा. पंकज कुमार त्यागी, डा. केसी शर्मा, डा. विजय शंकर पांडेय, बबिता, दीप्ति आदि रहे।

कोरोना आपदा में 4.64 लाख गरीबों को निश्शुल्क अनाज वितरण

मीरजापुर। आजादी का अमृत महोत्सव के तहत पथरहिया स्थित भारतीय खाद्य निगम के सभागार में अन्न योजना व जन वितरण महोत्सव का आयोजन किया गया। शुभारंभ के साथ ही नगर पालिका अध्यक्ष मनोज जायसवाल ने सरकार की कल्याणकारी योजना पर विस्तार से प्रकाश डाला। क्वालिटी इंस्पेक्टर रतनेश मिश्रा ने बताया कि भारतीय खाद्य निगम मीरजापुर के द्वारा प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत वर्ष 2020-21 में 41652 एमटी चावल, 31375 एमटी गेहूं तथा वर्ष 2021-22 में 34046 एमटी चावल और 61029 एमटी गेहूं का वितरण किया गया। योजना से मीरजापुर में लगभग 4.64 लाख गरीब लाभार्थियों को कोरोना के कठिन काल में निश्शुल्क अनाज का वितरण सितंबर 2022 तक जारी रहेगा। योजना गरीबों के लिए वरदान साबित हुई। देश में भुखमरी उनन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका रही। प्रबंधक एफसीआई सिद्धार्थ चक्रपाणि ने बताया कि निगम ने कोरोना काल में भी योजनाओं का क्रियान्वयन अनवरत जारी रखा। कार्यालय द्वारा कोरोना टीकाकरण के लिए शिविर का भी आयोजन कराया गया था। बीते दिनों फोर्टीफाइड चावल किट का भी वितरण किया गया था। मंडल प्रबंधक एफसीआई सुनील कुमार, डिप्टी आरएमओ धनंजय सिंह, एआरओ लक्ष्मण राम ने विचार व्यक्त किया। राम नारायण सिंह, दिनेश राय रहे।

दस फीसद सुविधा शुल्क लेने के प्रकरण में डीएम सख्त, मांगी रिपोर्ट

मीरजापुर। जनपद में राजकीय हाईस्कूल में नवनियुक्त शिक्षकों से दस फीसद सुविधा शुल्क लेकर एरियर देने के प्रकरण को जिलाधिकारी प्रवीण कुमार लक्षकार ने गंभीरता से लिया है। डीएम ने जिला विद्यालय निरीक्षक सत्येंद्र कुमार सिंह से प्रकरण की पूरी रिपीट मांगी है। इसके बाद डीआईओएस ने वित्त व लेखाधिकारी माध्यमिक शिक्षा प्रदीप पाल और पटल सहायक रवि दुबे से स्पष्टीकरण मांगा है, साथ ही प्रकरण में समुचित स्पष्टीकरण नहीं देने पर कार्रवाई की भी चेतावनी दी है। विभागीय लापरवाही के चलते एरियर के लिए आया बजट शासन को सरेंडर करना पड़ा। जनपद के नवनियुक्त राजकीय हाईस्कूल के शिक्षकों ने मंगलवार को जिला मुख्यालय और डीआईओएस कार्यालय पर धरना प्रदर्शन किया था। नवनियुक्त शिक्षक प्रमोद कुमार, राकेश कुमार पटेल, विवेक सिंह, महेंद्र प्रताप सिंह, सहजाद अहमद, रजनीश यादव, नीरज सिंह, प्रिया जायसवाल ने संबंधित को सौंपे गए पत्रक में कहा था कि जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय में वित्त व लेखाधिकारी माध्यमिक शिक्षा और सहायक पटल द्वारा दस फीसद सुविधा शुल्क देने के बाद शिक्षकों को बकाया एरियर का भुगतान किया जा रहा है। जनपद में राजकीय माध्यमिक समग्र शिक्षा अभियान रमसा का बजट 31 मार्च 2022 को लगभग पांच करोड़ का बजट प्राप्त हुआ था, कितु इस विषय पर वित्त व लेखाधिकारी माध्यमिक शिक्षा द्वारा कोई एरियर भुगतान की सूचना संबंधित विद्यालयों को नहीं दिया गया। कुछ चहेते शिक्षकों को अवशेष 10 फीसद सुविधा शुल्क लेकर उनका भुगतान कर दिया गया। वहीं सुविधा शुल्क नहीं देने वाले शिक्षकों के एरियर का भुगतान करने की बजाए बजट को सरेंडर कर दिया। प्रकरण को गंभीरता से लेते हुए डीआईओएस ने संबंधित से स्पष्टीकरण मांगा है।

मैदान में घुसकर आरसीबी के पूर्व कप्तान विराट कोहली को मुक्का मारने वाला गिरफ्तार

पुणे। रायल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) और मुंबई इंडियंस के बीच शनिवार को खेले गए आइपीएल 2022 के 18वें मैच के

दौरान सुरक्षा को धता बताते हुए मैदान में घुसकर कर रोहित शर्मा और विराट कोहली के साथ अतिचार करने की कोशिश करने वाले एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया है। यहां के एक पुलिस अधिकारी ने रविवार का बताया कि इस 26 साल के व्यक्ति का नाम दशरथ जाधव है जो महाराष्ट्र के सतारा जिले का है। इस घटना का वीडियो इंटरनेट मीडिया पर वायरल हो गया है। यह व्यक्ति बल्लेबाजी कर रहे विराट कोहली को मुक्का मारने के बाद मुंबई इंडियंस के कप्तान रोहित शर्मा की ओर बढ़ गया था। तलेगांव थाने के वरिष्ठ पुलिस निरीक्षक मधुकर सावंत ने कहा कि जाधव पर आइपीसी की धारा 447 (आपराधिक अतिचार) और 353 (लोक सेवक को उसके कर्तव्य के निर्वहन से रोकने के लिए हमला) के तहत आरोप लगाया गया था। वह कथित तौर पर पुलिस के साथ विवाद में भी शामिल था। आपको बता दें कि आइपीएल 2022 के 18वें लीग मैच में मुंबई का सामना आरसीबी के साथ हुआ था। इस मैच में मुंबई ने पहली पारी में बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 6 विकेट पर 151 रन बनाए थे। इसके जवाब में आरसीबी ने 18.3 ओवर में 3 विकेट पर 152 रन बनाकर मैच में 7 विकेट से जीत दर्ज की। इस मुकाबले में आरसीबी की बल्लेबाजी काफी अच्छी रही और ओपनर बल्लेबाज अनुज रावत ने 47 गेंदों पर 6 छक्के व 2 चौकों की मदद से 66 रन की पारी खेली। वहीं कप्तान फाफ डुप्लेसिस ने 16 रन बनाए जबकि विराट कोहली ने 36 गेंदों पर 5 चौकों की मदद से 48 रन की पारी खेली थी।

संजू के सामने नहीं टिक पाए केएल राहुल, मिली तीन रन से करीबी हार

नई दिल्ली। संजू सैमसन की कप्तानी में राजस्थान रायल्स का सामना आइपीएल 2022 के 20वें मैच में केएल राहुल की कप्तानी वाली टीम लखनऊ सुपर जाइंट्स के साथ मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम पर हुआ। इस मैच में लखनऊ के कप्तान केएल राहुल ने टास जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। राजस्थान की टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 6 विकेट पर 165 रन बनाए और लखनऊ को जीत के लिए 166 रन का लक्ष्य दिया। लखनऊ ने 20 ओवर में 8 विकेट पर 162 रन बनाए और इस टीम को तीन रन से हार मिली। लखनऊ की शुरुआत बेहद खराब रही और दूसरी पारी के पहले ओवर की पहली ही गेंद बोल्ट ने कप्तान केएल राहुल को बोल्ड कर दिया तो दूसरी गेंद पर ही कृष्णप्पा गौतम को शून्य पर ही पगबाधा आउट कर दिया। राहुल और गौतम दोनों ही गोल्डन डक का शिकार हुए। जेसन होल्डर को प्रसिद्ध कृष्णा ने 8 रन पर अश्विन के हाथों कैच आउट करवा दिया। दीपक हुडा ने 25 रन बनाए और वो कुलदीप सेन की गेंद पर आउट हुए। आयुष बदोनी चहल की गेंद पर 5 रन बनाकर कैच आउट हो गए। डिकाक को चहल ने ही 39 रन पर रेयान पराग के हाथों कैच करवा दिया। क्रुणाल पांड्या भी 22 रन बनाकर चहल की गेंद पर बोल्ड हुए और वो उनका इस मैच में तीसरा शिकार बने। चहल ने चमीरा को 13 रन पर पगबाधा आउट

किया। लखनऊ की तरफ से चहल ने काफी अच्छी गेंदबाजी की और उन्होंने चार विकेट लिए। लखनऊ को पहली सफलता आवेश खान ने दिलाई और उन्होंने ओपनर बल्लेबाज जोस बटलर को 13 रन पर क्लीन बोल्ड कर दिया। कप्तान संजू सैमसन ने इस मैच में 13 रन की पारी खेली और जेसन होल्डर की गेंद पर वो पगबाधा आउट हो गए। इस मैच में बतौर ओपनर उतरे देवदत्त पडीक्कल ने 29 गेंदों पर 29 रन बनाए, लेकिन कृष्णप्पा गौतम ने उन्हें होल्डर के हाथों कैच आउट करवा दिया तो वहीं वान डेर डुसेन को भी गौतम ने ही 4 रन पर बोल्ड कर दिया। अश्विन 28 रन बनाकर रिटायर हर्ट हो गए तो वहीं रेयान पराग 8 रन पर आउट हो गए। हेटमायर ने 36 गेंदों पर 6 छक्कों व एक चौके की मदद से नाबाद 59 रन बनाए वहीं बोल्ट 2 रन बनाकर नाबाद रहे। लखनऊ की तरफ से होल्डर व गौतम ने दो-दो विकेट लिए। लखनऊ की टीम ने इस मैच के लिए दो बदलाव किए जिसमें एंड्र्यू टे और इविन लुईस को प्लेइंग इलेवन से बाहर किया गया और इनकी जगह मार्कस स्टायनिस और दुष्मंथा चमीरा की एंट्री हुई। वहीं राजस्थान ने भी दो परिवर्तन किए जिसमें कुलदीप सेन और वान डर डुसेन को प्लेइंग इलेवन में जगह मिली तो वहीं नवदीप सैनी और यशस्वी जयसवाल की टीम से छुट्टी हुई। केएल राहुल (कप्तान), क्विंटन डी काक (विकेटकीपर), मार्कस स्टोइनिस, दीपक हुडा, आयुष बदोनी, क्रुणाल पांड्या, जेसन होल्डर, कृष्णप्पा गौतम, दुष्मंथा चमीरा, रवि बिशनेई, अवेश खान। जोस बटलर, वान डर डुसेन, देवदत्त पडिक्कल, संजू सैमसन (कप्तान, विकेटकीपर), शिमरोन हेटमायर, रियान पराग, कुलदीप सेन, रविचंद्रन अश्विन, ट्रेंट बोल्ट, प्रसिद्ध कृष्णा, युजवेंद्र चहल।

कप्तान डुप्लेसिस ने कहा भविष्य का स्टार बनने की तरफ बढ़ रहा है यह युवा विकेटकीपर-बल्लेबाज

पुणे। आरसीबी के नए कप्तान फाफ डुप्लेसिस इस आइपीएल में अपनी टीम के साथी अनुज रावत से काफी प्रभावित हैं और उन्हें लगता है कि यह युवा विकेटकीपर बल्लेबाज भविष्य का स्टार बनने की ओर अग्रसर है। बायें हाथ के बल्लेबाज रावत ने इस आइपीएल में अब तक

आरसीबी के सभी मैचों में डुप्लेसिस के साथ पारी शुरू की है, लेकिन रावत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन शनिवार को पिछले मुकाबले में ही आया, जिसमें उन्होंने 47 गेंद में 66 रन की पारी खेली और पांच बार की चैंपियन मुंबई इंडियंस के खिलाफ मिली जीत में प्लेयर आफ द मैच रहे। डुप्लेसिस ने यहां एमसीए स्टेडियम में मुंबई इंडियंस पर मिली सात विकेट की जीत के बाद कहा, 'वह इस समय जिस तरह से खेल रहा है, वह शानदार है। वह भविष्य के लिए बहुत अच्छा खिलाड़ी है। वह मैदान पर जज्बा दिखाता है और भविष्य के लिए बहुत ही अच्छा खिलाड़ी है। इस समय यह युवा हमारे लिए बहुत बढिया खेल रहा है।' रावत का आइपीएल में पदार्पण राजस्थान रायल्स के साथ 2021 में कोलकाता नाइटराइडर्स के खिलाफ काफी फीका रहा था जिसमें वह शून्य पर आउट हुए थे। उत्तराखंड में रामनगर के किसान के बेटे रावत को उस सत्र में सिर्फ यही मैच मिला था। आरसीबी ने इस साल की मेगा नीलामी में उन्हें तीन करोड़ 40 लाख रुपये में खरीदा।रावत ने 2017-18 में दिल्ली के रणजी पदार्पण किया था और अगले ही सत्र में पहला शतक (183 गेंद में 134 रन) जमाकर प्रभावित किया। इससे दिल्ली की टीम पांच विकेट पर 36 रन के स्कोर से उबरकर नौ विकेट की जीत दर्ज करने में सफल रही थी।

चहल आइपीएल में सबसे कम पारियों में 150 विकेट लेने वाले भारतीय गेंदबाज बने

नई दिल्ली। आइपीएल 2022 के 20वें मैच में लखनऊ सुपर जाइंट्स के खिलाफ राजस्थान रायल्स के स्टार स्पिनर युजवेंद्रा चहल ने काफी अच्छी गेंदबाजी की और चार विकेट चटकाए। इस चार विकेट के दम पर उन्होंने आइपीएल में 150 विकेट भी पूरे किए। यही नहीं वो इस लीग में सबसे कम पारियों में 150 विकेट लेने वाले भारतीय गेंदबाज भी बने। इस मैच में राजस्थान को तीन रन के अंतर से जीत मिली और टीम की इस जीत में चहल की गेंदबाजी का भी बड़ा योगदान रहा। आइपीएल में चहल से पहले सबसे कम मैचों में 150 विकेट लेने वाले भारतीय गेंदबाज अमित शर्मा थे, लेकिन अब चहल ने उन्हें पीछे छोड़ दिया है। चहल ने इस लीग में अपने 150 विकेट 118 मैचों में पूरे किए जबकि अमित मिश्रा ने ये उपलब्धि 140 मैचों में हासिल की थी। इस मामले में तीसरे नंबर पर पीयूष चावला हैं जिन्होंने ये कमाल 156 मैचों में किया था। वहीं भज्जी ने 159 मैचों में 150 विकेट लेने का कमाल किया था। चहल ने लखनऊ के खिलाफ 4 ओवर में 41 रन देकर 4 विकेट लिए। उन्होंने लखनऊ के क्विंटन

डिकाक, आयुष बदोनी, क्रुणाल पांड्या और दुष्मंथा चमीरा को आउट किया। चहल आइपीएल में 150 विकेट लेने वाले छठे गेंदबाज बने। उनसे पहले ड्वेन ब्रावो, लसिथ मलिंगा, अमित मिश्रा, पीयूष चावला और हरभजन सिंह ये कमाल कर चुके हैं। वहीं चहल आइपीएल में सबसे ज्यादा विकेट लेने के मामले में पांचवें नंबर पर पहुंच गए हैं। आइपीएल में उनका अब तक का बेस्ट प्रदर्शन 25 रन देकर 4 विकेट रहा है और उन्होंने तीन बार एक मैच में चार विकेट लेने का कमाल किया है।

लगातार जीत रहे गुजरात का सामना हैदराबाद के साथ

मुंबई। आइपीएल में अपने पदार्पण में लगातार तीन जीत दर्ज करके आत्मविश्वास से भरी गुजरात टाइटंस सोमवार को इस स्वप्निल शुरुआत को सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ भी जारी रखना चाहेगी, जिसका प्रदर्शन निरंतर नहीं रहा है। गुजरात टाइटंस ने लगातार जीत से लय हासिल कर ली है

और पंजाब किंग्स के खिलाफ मैच में उन्होंने दिखा दिया कि वे किसी भी परिस्थिति में जीत सकते हैं। कप्तान हार्दिक पांड्या को सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ रणनीतिक कुशलता दिखानी होगी, जिसने चेनन्ई सुपरकिंग्स के खिलाफ पहली जीत दर्ज की, लेकिन अंक तालिका में फिर भी नीचे ही बनी हुई है। गुजरात टाइटंस को प्रत्येक मैच में अलग-अलग मैच विजेता मिले हैं और टीम हर मैच में सुधार करना जारी रखना चाहेगी। वहीं सनराइजर्स हैदराबाद ने निराशाजनक अभियान शुरू करने के बाद एक जीत हासिल की।डीवाई पाटिल स्टेडियम में फिर ध्यान युवा शुभमन गिल पर होगा, जो अपनी शीर्ष फार्म में हैं और पंजाब किंग्स के खिलाफ उन्होंने आइपीएल में अपना सर्वश्रेष्ठ स्कोर भी बनाया। दायें हाथ के इस बल्लेबाज को हालांकि मैथ्यू वेड और साई सुदर्शन के सहयोग की जरूरत होगी। वेड में जहां बड़े शाट खेलने की काबिलियत है तो सुदर्शन ने पिछले मैच में उपयोगी पारी खेली थी। पंजाब किंग्स के खिलाफ पिछले मैच में राहुल तेवतिया दो छक्के जड़कर मैच विजेता बने, जिससे उनका मनोबल काफी बढ़ा होगा। गुजरात टाइटंस की टीम अंतिम ओवरों के विशेषज्ञ भुवनेश्वर कुमार के सामने होगी, जिसमें उनके साथ उमरान मलिक, टी नटराजन और वाशिंगटन सुंदर जैसे गेंदबाज शामिल हैं। वहीं दक्षिण अफ्रीकी तेज गेंदबाज माकी जेनसेन की विविधता भरी गेंदबाजी भी होगी, जिससे बल्लेबाजों के लिए मुश्किल हो सकती है।वहीं गुजरात टाइटंस के गेंदबाजों ने अच्छा प्रदर्शन किया है जिसमें हार्दिक के चार ओवर किसी भी मैच का परिदृश्य बदल सकते हैं जबकि लाकी फर्ग्यूसन एक ऐसे अन्य तेज गेंदबाज हैं जो खतरनाक हो सकते हैं और मुहम्मद शमी भी नई गेंद से प्रभावी रहे हैं। उनके लिए एक अन्य महत्वपूर्ण खिलाड़ी राशिद खान हैं जो अपनी पूर्व टीम सनराइजर्स हैदराबाद के सामने चुनौतियां पेश कर सकते हैं। सनराइजर्स हैदराबाद के लिए पहले दो मैच में असफलता के बाद कप्तान केन विलियमसन ने शुरुआत दिलाई और वह गुजरात टाइटंस के खिलाफ इसे बड़ी पारी में तब्दील करने के लिए बेकरार होंगे। सनराइजर्स हैदराबाद के सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा ने खुद पर दिखाए गए भरोसे पर खरा उतरते हुए शनिवार को 75 रन की मैच विजयी पारी खेली जिससे टीम ने 17.5 ओवर में 155 रन के लक्ष्य को हासिल कर लिया। वह भी इसी फार्म को जारी रखना चाहेंगे। राहुल त्रिपाठी की भूमिका भी काफी अहम होगी और ऐसा ही निकोलस पूरन और एडेन मार्करैम के साथ भी होगा। इन तीनों को निरंतरता दिखाने के साथ मध्यक्रम में जिम्मेदारी लेकर अपनी काबिलियत भी दिखानी होगी। सुंदर में भी छोटी लेकिन महत्वपूर्ण पारी खेलने की क्षमता है। दोनों टीमें अपने संयोजन में छेड़छाड़ नहीं करना चाहेंगी। ओस को देखते हुए टास अहम होगा जो पहले भी ज्यादातर मैचों में साबित हो चुका है।सनराइजर्स हैदराबाद : केन विलियमसन (कप्तान), अभिषेक शर्मा, राहुल त्रिपाठी, एडेन मार्करैम, निकोलस पूरन, अब्दुल समद, प्रियम गर्ग, विष्णु विनोद, ग्लेन फिलिप्स, आर समर्थ, शशांक सिंह, वाशिंगटन सुंदर, रोमेरियो शेफर्ड, माकी जेनसेन, जे सुचित, श्रेयस गोपाल, भुवनेश्वर कुमार, सीन एबाट, कार्तिक त्यागी, सौरभ तिवारी, फजलहक फारुकी, उमरान मलिक, टी नटराजन। गुजरात टाइटंस : हार्दिक पांड्या (कप्तान), राशिद खान, शुभमन गिल, मुहम्मद शमी, लाकी फर्ग्यूसन, अभिनव सदरंगानी, राहुल तेवतिया, नूर अहमद, साई किशोर, विजय शंकर, जयंत यादव, डोमिनिक ड्रेक्स, दर्शन नालकंडे, यश दयाल, अल्जारी जोसेफ, प्रदीप सांगवान, डेविड मिलर, रिद्धिमान साहा, मैथ्यू वेड, वरुण आरोन, बी साई सुदर्शन।

कुलदीप की गेंदबाजी के सामने कोलकाता की एक न चली दिल्ली ने 44 रनों से हराया

नई दिल्ली। इंडियन प्रीमियर लीग का 19वां मुकाबला कोलकाता नाइट राइडर्स और दिल्ली कैपिटल्स के बीच ब्रेबोर्न स्टेडियम में खेला गया। 216 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी कोलकाता की टीम केवल 171 रन बनाकर आलआउट हो गई। कोलकाता की तरफ से श्रेयस अय्यर ने 54 रनों की पारी

खेली। इससे पहले दिल्ली ने बल्लेबाजी करते हुए 5 विकेट के नुकसान पर 215 रन बनाए थे। दिल्ली की तरफ से डेविड वार्नर ने 61 और पृथ्वी शा ने 51 रन की पारी खेली थी। इस जीत के साथ दिल्ली के 4 मैचों में 4 अंक हो गए हैं। कोलकाता की तरफ से कप्तान श्रेयस को छोड़कर कोई भी बल्लेबाज टिक नहीं सका। उन्होंने 54 रनों की पारी खेली। इससे पहले कोलकाता को पहला झटका वेंकटेश अय्यर के रूप में लगा। उन्हें खलील ने अक्षर पटेल के हाथों कैच कराया। उन्होंने 18 रन की पारी खेली। रहाणे के रूप में कोलकाता को दूसरा झटका लगा। उन्होंने 8 रन बनाए, उन्हें खलील अहमद ने शार्दुल ठाकुर के हाथों कैच कराया। तीसरा झटका नीतीश राणा के रूप में लगा, उन्होंने 30 रन बनाए। उन्हें ललित यादव ने पृथ्वी के हाथों कैच कराया। कोलकाता को चौथा झटका श्रेयस के रूप में लगा उन्होंने 54 रन की पारी खेली। उन्हें कुलदीप यादव ने पंत के हाथों कैट कराया। कोलकाता को 5वां झटका बिलिंग्स के रूप में लगा उन्हें खलील ने ललित यादव के हाथों आउट कराया। उन्होंने 15 रन बनाए। पैट कमिंस के रूप में कोलकाता को छठा झटका लगा। उन्हें कुलदीप यादव ने एलबीडब्लूयू आउट किया। उन्होंने 4 रन बनाए। 7वें विकेट के रूप में सुनील नरेन आउट हुए उन्हें कुलदीप यादव ने पावेल के हाथों कैच कराया। इसी ओवर में कुलदीप ने कोलकाता को 8वां झटका दिया और कुलदीप को अपनी ही गेंद पर बिना खाता खोले पवेलियन भेजा। 9वें विकेट के रूप में रसेल आउट हुए उन्हें 24 के स्कोर पर शार्दुल ठाकुर ने सरफराज के हाथों कैच करवाया। दिल्ली की तरफ से वार्नर और पृथ्वी ने टीम को तेज शुरुआत दिलाई। दोनों ने पहले विकेट के लिए 93 रन जोड़े।पृथ्वी 51 रन बनाकर आउट हुए। उन्हें वरुण चक्रवर्ती ने बोल्ड किया। दूसके विकेट के रूप में पंत आउट हुए, उन्हें आंद्रे रसेल ने उमेश यादव के हाथों कैच आउट करवाया। उन्होंने 27 रन की छोटी से पारी खेली। तीसरे विकेट के रूप में ललित यादव 1 रन बनाकर आउट हुए। उन्हें सुनील नरेन ने एलबीडब्लूयू आउट किया। दिल्ली को चौथा झटका पावेल के रूप में लगा। उन्हें 8 रन के स्कोर पर सुनील ने रिंकू सिंह के हाथों कैच कराया। 5वें विकेट के रूप में वार्नर आउट हुए। उन्हें उमेश यादव ने रहाणे के हाथों कैच कराया। उन्होंने 61 रन की तेज-तर्रार पारी खेली। दिल्ली की टीम इस मैच के लिए एक बदलाव जबकि कोलकाता बिना किसी बदलाव के साथ मैदान पर उतरी। दिल्ली ने एनरिच नार्जे को प्लेइंग इलेवन से बाहर किया और उनकी जगह खलील अहमद को टीम में शामिल किया। दिल्ली की प्लेइंग इलेवन पृथ्वी शा, डेविड वार्नर, रिषभ पंत (कप्तान, विकेटकीपर), रोवमैन पावेल, सरफराज खान, ललित यादव, अक्षर पटेल, शार्दुल ठाकुर, कुलदीप यादव, मुस्ताफिजुर रहमान, खलील अहमद।अजिंक्य रहाणे, वेंकटेश अय्यर, श्रेयस अय्यर (कप्तान), सैम बिलिंग्स (विकेटकीपर), नितीश राणा, आंद्रे रसेल, सुनील नरेन, पैट कमिंस, उमेश यादव, रसिक सलाम, वरुण चक्रवर्ती।

पृथ्वी शा ने अपनी तेज पारी के दम पर तोड़ा आइपीएल में वीरेंद्र सहवाग का बड़ा रिकार्ड

नई दिल्ली। दिल्ली कैपिटल्स के ओपनर बल्लेबाज पृथ्वी शा आइपीएल 2022 के शुरुआती कुछ मुकाबलों में लय में नहीं दिखे, शा ने केकेआर से पहले दिल्ली के लिए खेलते हुए लखनऊ सुपर जाइंट्स के खिलाफ भी 61 रन की शानदार पारी खेली। अब केकेआर के विरुद्ध उन्होंने 51 रन की पारी खेली और इस पारी के दम पर उन्होंने सहवाग का एक रिकार्ड तोड़ दिया। पृथ्वी शा अब आइपीएल में बतौर भारतीय बल्लेबाज पावरप्ले में सबसे तेज 1000 रन बनाने के मामले में दूसरे नंबर पर पहुंच गए। पृथ्वी शा ने इस लीग में पावरप्ले में अपने 1000 रन 57 पारियों में पूरे किए और दूसरे नंबर पर आ गए।

लेकिन अब उन्होंने रफ्तार पकड़ ली है और केकेआर के खिलाफ उन्होंने 29 गेंदों पर 2 छक्के व 7 चौकों की मदद से तेज 51 रन की पारी खेली। उन्होंने अपने साथी ओपनर बल्लेबाज डेविड वार्नर के साथ मिलकर टीम को मजबूत शुरुआत दिलाई और इसके दम पर ही दिल्ली की टीम ने केकेआर के खिलाफ 20 ओवर में 5 विकेट पर 215 रन का बड़ा स्कोर बनाया। शा ने वार्नर के साथ मिलकर पहले विकेट के लिए 93 रन की मजबूत साझेदारी की तो वहीं वार्नर ने भी 61 रन का योगदान दिया।

इस बड़ी वजह से अब पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे सकते हैं रमीज राजा

कराची। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के चेयरमैन रमीज राजा देश के प्रधानमंत्री पद से इमरान खान को हटाए जाने के बाद अपने

पद से इस्तीफा देने पर विचार कर रहे हैं। रमीज राजा भी इमरान खान की तरह पाकिस्तान क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान हैं। वह इस समय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आइसीसी) बैठक में हिस्सा लेने के लिए दुबई में हैं। इसकी जानकारी रखने वाले एक सूत्र ने रविवार को कहा, 'रमीज राजा ने इमरान खान के जोर देने पर ही पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड का चेयरमैन बनने पर सहमति जताई थी क्योंकि उनकी कप्तानी में खेलने वाली सभी खिलाड़ी उनका काफी सम्मान करते हैं जिसमें रमीज राजा भी शामिल हैं।'उन्होंने कहा कि रमीज राजा का करियर कमेंटेटर, टीवी कमेंटेटर और विशेषज्ञ के तौर पर बहुत अच्छा चल रहा था और वह अपनी प्रतिबद्धताओं में व्यस्त थे। लेकिन इमरान खान के जोर देने पर ही उन्होंने सभी मीडिया करार तोड़ दिए और बोर्ड के चेयरमैन बन गए। सूत्र ने कहा कि रमीज राजा ने इमरान खान को भी स्पष्ट कर दिया था कि वह तब तक ही बोर्ड चेयरमैन बने रहेंगे जब तक वह प्रधानमंत्री बने रहते हैं।

राशिफल

मेष-बाहरी गतिविधियां काफी थका देने वाली और तनावपूर्ण साबित होंगी. अटकलों के आधार पर पैसा निवेश करने

वृष-:आज का दिन आपके लिए अनुकूल रहेगा। आप अपनी वाणी और बातचीत के कौशल के कारण अच्छे परिणाम प्राप्त करने में सक्षम होंगे। आज

मिथुन-:आज लंबे समय से चली आ रही परेशानियां खत्म हो सकती हैं. चीजों और लोगों को जल्दी से आंकने की क्षमता आपको दूसरों से आगे बनाए

कर्क-:यात्रा आपको थकान और तनाव देगी लेकिन आर्थिक रूप से फायदेमंद साबित होगी. परिवार पर हावी होने की हमारी आदतों को छोड़ने का समय आ

सिंह-:आज आपको कुछ अतिरिक्त बोझ उठाना पड़ सकता है. यह बात अतिरिक्त खर्च, अतिरिक्त जिम्मेदारी, अतिरिक्त भागदौड़ से जुड़ी हो

कन्या-:सेहत में सुधार करें, क्योंकि कमजोर शरीर भी दिमाग को कमजोर बनाता है. तुरंत मौज-मस्ती करने की अपनी प्रवृत्ति पर नियंत्रण रखें और मनोरंजन पर जरूरत से ज्यादा

तुला-:आज आपका सकारात्मक और आशावादी रवैया और आपकी कुशल और कड़ी मेहनत आपको दिन भर सफलता दिलाएगी. भाग्य का भी पूरा साथ

वृश्चिक-:आज किसी पुराने मित्र से मुलाकात होने की संभावना है. करीबी लोग विरोध करेंगे। धैर्य और विवेक को बनाए रखना होगा। काम का बोझ बढ़ने से

धनु-:लंबी अवधि के मुनाफे की दृष्टि से शेयरों और म्यूचुअल फंड में निवेश फायदेमंद रहेगा. एक सुखद और शानदार शाम के लिए आपका घर मेहमानों

मकर-:आज का दिन आपके लिए अपार समृद्धि और सफलता का दिन है. आज आपका साहस और जोखिम लेने की प्रवृत्ति

कुंभ-:आज आप अपने प्रियतम की याद से रूबरू होंगे. अपने काम और प्राथमिकताओं पर ध्यान दें। सामाजिक और धार्मिक

मीन-:आज आप आसानी से धन इकट्ठा कर सकते हैं - लोगों को दिए गए पुराने ऋणों को वापस पा सकते हैं - या किसी नए प्रोजेक्ट पर निवेश करने के लिए

सम्पादकीय

चिंता का सबब बना अंतरिक्ष में फैला कचरा

इस माह के आरंभ में गुजरात, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के कई इलाकों में आसमान से आग के गोले गिरते दिखाई दिए थे। कई जगह पर प्रत्यक्ष रूप से इन्हें धरती पर गिरते हुए भी देखा गया। इस तरह की आसमानी घटनाओं के संदर्भ में विज्ञानियों का कहना है कि यह अंतरिक्ष का कचरा या मलबा हो सकता है। अगर यह मलबा ज्यादा बड़े आकार का होता और किसी आवासीय क्षेत्र में गिरता तो यह जानमाल को भी भारी नुकसान पहुंचा सकता था। दरअसल अंतरिक्ष में एकत्रित हो रहा कचरे का ढेर भविष्य में धरती पर रह रहे लोगों के साथ-साथ यहां सक्रिय तमाम उपग्रहों, अंतरिक्ष यात्रियों और अंतरिक्ष स्टेशनों के लिए भी बेहद घातक साबित हो सकता है। इतना ही नहीं, इससे हमारी संचार व्यवस्था के भी प्रभावित होने की आशंका पैदा हो सकती है। ऐसे में जिस तरह से आज आधुनिक तकनीक आधारित तमाम गैजेट्स हमारी दिनचर्या का हिस्सा बन गए हैं, उससे अलग तरह के नुकसान की आशंका भी हो सकती है। यदि हम अंतरिक्ष में मौजूद तमाम मानव जनित पदार्थों की बात करें तो एक अनुमान के मुताबिक छोटे-बड़े मिलाकर लगभग 17 करोड़ पुराने राकेट और बेकार हो चुके उपग्रहों के टुकड़े आठ किलोमीटर प्रति सेकेंड की रफ्तार से पृथ्वी की कक्षा में चक्कर लगा रहे हैं। आपस में टक्कर होने से ये और भी टुकड़ों में बंट रहे हैं जिससे इनकी संख्या में दिनों-दिन बढ़ोतरी हो रही है। ब्रिटिश खगोल विज्ञानी रिचर्ड क्राउडर के अनुसार इस संबंध में सबसे बड़ी समस्या यह है कि पृथ्वी से 22,300 मील यानी लगभग 36 हजार किलोमीटर ऊपर की भू-स्थैतिक कक्षा में अंतरिक्षीय कचरे के जमघट और आपसी टक्कर के परिणामस्वरूप दुनिया की संचार व्यवस्था भी चौपट हो सकती है। इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अंतरिक्ष में आठ किलोमीटर प्रति सेकेंड की रफ्तार से चक्कर काट रहे सिक्के के आकार के किसी पदार्थ से किसी दूसरे सिक्के के आकार वाले पदार्थ की टकराहट होती है तो उससे वैसा ही प्रभाव होगा जैसा धरती पर लगभग सौ किलोमीटर की रफ्तार से चल रही दो बसों की टक्कर से होता है। अंतरिक्ष में तैरते कचरे से टकराने पर अंतरिक्ष यान और एक्टिव सैटेलाइट्स नष्ट हो सकते हैं। इसके साथ ही, धरती पर इंटरनेट, जीपीएस, टेलीविजन प्रसारण जैसी अनेक आवश्यक सेवाएं भी बाधित हो सकती हैं। अंतरिक्ष में मानवीय दखल का इतिहास कोई बहुत पुराना नहीं है। महज छह दशक पहले ही पहली बार इंसान ने अंतरिक्ष में अपना दबदबा कायम किया है। उल्लेखनीय है कि अक्टूबर 1957 में तत्कालीन सोवियत संघ द्वारा अंतरिक्ष में भेजे गए पहले मानव निर्मित सेटेलाइट स्पूतनिक-1 के बाद से हजारों राकेट, सेटेलाइट, स्पेस प्रोब और टेलीस्कोप अंतरिक्ष में भेजे गए हैं। लिहाजा समय के साथ अंतरिक्ष में कचरा बढ़? की रफ्तार भी बढ़ती गई। यह कुछ-कुछ वैसा ही है, जैसे पृथ्वी के कई पहाड़ों पर अत्यधिक पर्वतारोहण की वजह से तरह-तरह के कूड़े-करकट के अंबार लगे हैं, उसी तरह से अंतरिक्ष में पृथ्वी की कक्षा में कबाड़ की एक चादर फैल गई है। एक अनुमान के अनुसार पिछले 25 वर्षों में अंतरिक्ष में कचरे की मात्रा दोगुनी से भी ज्यादा हो गई है। मानव जाति के लिए खतरनाक : अंतरिक्ष का कचरा मानव जाति और इस पृथ्वी के समस्त जीव जगत के लिए घातक है। अगर ये अनियंत्रित लाखों डिग्री सेल्सियस ताप पर दहकते टुकड़े घनी बस्तियों पर गिरते हैं तो जानमाल दोनों की बड़ी हानि हो सकती है। वर्ष 2001 में कोलंबिया स्पेस शटल की दुर्घटना में भारतीय मूल की कल्पना चावला समेत सात अन्य अंतरिक्ष यात्रियों की जान चली गई थी। इस दुर्घटना के अलग-अलग कारण बताए जाते हैं, लेकिन कुछ रिपोर्टों में यह आशंका जताई गई थी कि अंतरिक्ष में भटकते एक टुकड़े से टकराने की वजह से यह भीषण त्रासदी हुई थी। जिस तरह से सभी देश अपने अंतरिक्ष कार्यक्रमों को अंजाम दे रहे हैं, उस तरह तो अंतरिक्ष में भीड़ और भी बढ़ेगी और यह भी स्पष्ट है कि इससे दुर्घटनाओं की आशंकाएं भी बढ़ेंगी। तो फिर इस समस्या का समाधान क्या है, इसके जवाब में विज्ञानी कहते हैं कि अंतरिक्ष से कचरे को एकत्रित करके वापस धरती पर लाना ही इस समस्या का एकमात्र समाधान है यानी अंतरिक्ष में भी धरती की ही तरह स्वच्छता अभियान चलाए जाने की आवश्यकता है। परंतु यह काम इतना आसान भी नहीं है। ऐसे में सभी देश यदि चाहें तो कम से कम इतना तो अवश्य किया जा सकता है कि जो भी देश अंतरिक्ष में अपनी ओर से कचरा पैदा कर रहा है यानी किसी कचरे के पैदा होने में जिस देश का योगदान है, वह उसे वापस लाने का खर्च वहन करे।

जब पूरी दुनिया रूस-यूक्रेन युद्ध में उलझी है तो चीन चुपचाप अपने विस्तारवादी मंसूबों को पूरा करने में जुटा है

दुनिया में इन दिनों यूक्रेन पर रूस के हमले की चर्चा है। इसने चीन की एक प्रकार से बड़ी मदद की है कि इस बीच वह बड़ी खामोशी और शातिर तरीके से एशिया में अपनी विस्तारवादी मुहिम को आगे बढ़ा रहा है। वह अपनी स्थलीय एवं सामुद्रिक सीमाओं को नए सिरे से खींचने के साथ ही ताइवान पर दबाव बढ़ा रहा है। रूस के सीधे सैन्य हमले के उलट चीन धीरे-धीरे यथास्थिति को अपने पक्ष में मोड़ने में लगा है। इसका ताजा उदाहरण चीनी सेना की इस कवायद में दिखता है, जिसमें उसने बड़े गुपचुप तरीके से हिमालयी क्षेत्र के विवादित हिस्सों में 624 गांवों का निर्माण पूरा कर लिया है। ये गांव उस सीमा में बने हैं, जिन्हें भारत, नेपाल और भूटान अपना हिस्सा मानते हैं। ऐसे सैन्य गांव वास्तव में दक्षिण चीन सागर में चीन द्वारा बनाए गए कृत्रिम द्वीपों की भांति हैं, जो उसके लिए अग्रिम मोर्चों की भूमिका निभा रहे हैं। यह उल्लेखनीय है कि भारत के साथ चल रहे सैन्य टकराव के बीच भी चीन इन गांवों के विकास में सफल रहा। दोनों देशों की सेनाओं में पिछले करीब दो वर्षों से संघर्ष जारी है। इस दौरान चीन ने लद्दाख के कुछ इलाकों में घुसपैठ का प्रयास किया तो भारत की ओर से भी उसे करारा जवाब मिला। सैन्य तनाव को घटाने के लिए सैन्य कमांडरों के बीच वार्ता जारी है। हाल में विदेश मंत्री एस. जयशंकर और चीनी विदेश मंत्री वांग यी नई दिल्ली में मिले। जबसे दोनों देशों के बीच हिमालयी मोर्चे पर तनातनी बढ़ी है, तबसे उच्च स्तर पर यही सबसे बड़ी मुलाकात हुई है। इन सबसे मामूली समाधान ही निकला है। प्रभावी नियंत्रण अंतरराष्ट्रीय कानून में क्षेत्रीय दावे में मजबूती का सबसे बड़ा प्रतीक है। इसीलिए चीन अत्यंत ऊंचाई वाले दुर्गम इलाकों में सुनियोजित आबादी को बसाने से लेकर मानव निर्मित द्वीपों का निर्माण कर रहा है। यह चीनी राष्ट्रपति शी चिर्नफग की विस्तारवादी नीति का अहम हिस्सा है। शी के इस विस्तारवाद ने भूटान जैसे बेहद छोटे से देश को भी नहीं बख्शा। चीन ने यथास्थिति को एकतरफा रूप से न बदलने संबंधी 1998 के द्विपक्षीय समझौते का उल्लंघन किया। अब भूटान की उत्तरी और पश्चिमी सीमा पर चीन के कई सैन्य गांव बस गए है। सीमा विवाद को सुलझाने के लिए भूटान करीब चार दशकों से चीन के साथ बातचीत कर रहा है। चीन का यह विस्तारवाद कई परतों वाली रणनीति के तहत संचालित होता है। इसमें सबसे पहले किसी इलाके पर दावा किया जाता है। फिर उसके इर्दगिर्द वह पूरा प्रपंच रचता है, जिसमें किसी प्रतिद्वंद्वी के लिए कोई गुंजाइश नहीं छोड़ता। दक्षिण चीन सागर का ही उदाहरण लें। उसमें आपको कई परतें दिखाई देंगी। मसलन वहां चीनी मछुआरों की नावें, तटरक्षक पोत और नौसेना के जहाजों की एक श्रृंखला दिखेगी। हिमालयी क्षेत्र में यह सिलसिला दुर्गम इलाकों में बस्तियां बसाने के रूप में दिखता है, जहां सैन्य-पुलिस पृष्ठभूमि के लोगों को ही सुनियोजित रूप से बसाया जाता है। चीन की रणनीति अपने प्रतिद्वंद्वी की कमजोरियों को निशाना बनाकर अपनी मनमर्जी करना है। इसी कड़ी में वह किसी जगह अपना दावा करने से पूर्व उसे विवादित स्वरूप देने में लगा रहता है। पूर्वी चीन सागर में जापान के नियंत्रण वाले सेनकाकू द्वीप को लेकर चीन पूरी दुनिया को इसी प्रकार बरगलाने में सफल रहा है। उसने न केवल सामुद्रिक, बल्कि हवाई सीमा के मोर्चे पर अपनी तिकड़में कर उसे विवादित बना दिया। इतना ही नहीं, इस जापानी द्वीप को उसने 'दीआओयू' जैसा चीनी नाम भी दे दिया है। जहां चीन ने यहां अपने युद्धपोत और बड़े जहाज भेजना शुरू कर दिया, वहीं जापान सेनकाकू पर लाइटहाउस के निर्माण जैसी रक्षात्मक मुद्रा अपनाने तक सीमित रह गया। वास्तव में किसी जापानी रक्षा मंत्री ने निर्जन सेनकाकू द्वीप का हवाई सर्वेक्षण तक नहीं किया। इसके पीछे यही वजह रही होगी कि चीन कहीं उसे किसी प्रकार के उकसावे की कार्रवाई न समझ ले। भौगोलिक कब्जे से जुड़ी शी की कुलबुलाहट असल में उस देश के लिए विकल्प सीमित कर देती है, जिसे वह निशाना बनाते हैं। इसमें प्रत्युत्तर को लेकर प्रतिद्वंद्वी देश भ्रमित हो जाता है। इसके माध्यम से शी यही चाहते हैं कि बढ़त की स्थिति उनके पास ही बनी रहे। प्रतिद्वंद्वी को किनारे लगाकर शी सभी विकल्प अपने पास रखना चाहते हैं। इसमें सैन्य टकराव बढ़ने की स्थिति में एकाएक हमले से चौंकाने का विकल्प भी शामिल है। इसमें युद्ध शुरू करने का ठीकरा भी दूसरे पक्ष पर फोड़ा जा सकता है। अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुसार कोई भी क्षेत्रीय दावा संबंधित क्षेत्र में संप्रभुता को लेकर निरंतर एवं शांतिपूर्ण कवायद पर आधारित होना चाहिए। हालांकि 2016 में एक अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता ट्रिब्यूनल ने दक्षिण चीन सागर में चीनी क्षेत्रीय दावे को अमान्य करार दिया था, लेकिन इससे चीन के रुख पर कोई असर नहीं पड़ा और उसने 'जिसकी लाठी, उसकी भैंस' वाला रवैया ही अपनाया। इस बीच अपने गैरकानूनी कृत्यों और दावों को लेकर अंतरराष्ट्रीय कानूनों से ताल मिलाने के लिए चीन घरेलू स्तर पर नए कानून बना रहा है। दक्षिण चीन सागर में मानव निर्मित द्वीपों और नए प्रशासनिक केंद्रों की स्थापना से लेकर हिमालयी क्षेत्र में गांवों की स्थापना इसी रणनीति को सिरे चढ़ाने का हिस्सा है। हिमालयी क्षेत्र में चीन के रहस्यमयी विस्तार का दायरा इन 624 सीमावर्ती गांवों से आगे जाता है। चीन विवादित सीमावर्ती क्षेत्रों में बड़े स्तर पर सैन्य बुनियादी ढांचे के निर्माण में भी जुटा है, ताकि टकराव की स्थिति में सैनिकों एवं सैन्य साजोसामान को तेजी से पहुंचाने की व्यवस्था की जा सके। भूटान की सीमा से गुजरने वाली नई चीनी सड़क से भारत के संवेदनशील बिंदु 'सिलिगुड़ी कारिडोर' को निशाना बनाए जाने की आशंका बढ़ी है। यही कारिडोर पूर्वोत्तर को शेष भारत से जोड़ता है। दिलचस्प बात यही है कि चीन अपने ऐसे मंसूबे बिना कोई गोली दागे पूरे करता दिख रहा है और उसे यह परवाह नहीं कि वह एक साथ दो मोर्चों पर भी उलझ सकता है। पेंटागन की एक रपट के अनुसार, 'चीन भारत के साथ सीमा पर बढ़ते तनाव के साथ किसी सूरत में ताइवान को लेकर उपजने वाली आपात स्थिति से निपटने की भी तैयारी कर रहा है।' कुल मिलाकर दुनिया में आर्थिक रूप से सबसे गतिशील क्षेत्र एशिया में चीन की बदनीयती असुरक्षा को ही बढ़ाने का काम कर रही है।

भारत में ऐसे क्षेत्रों की संख्या बढ़ रही है जहां हिंदुओं की आबादी हो रही है कम

सर्वोच्च न्यायालय में देश के नौ राज्यों में हिंदुओं को अल्पसंख्यक घोषित करने की गुहार लगाई गई है। यह मांग की गई है कि राज्य स्तर पर अल्पसंख्यकों की पहचान के लिए दिशानिर्देश बनाने का निर्देश दिया जाए। केंद्र सरकार की ओर से दाखिल हलफनामे में कहा गया है कि राज्य सरकारें राज्य की सीमा में धार्मिक और भाषाई आधार पर वैसे ही अल्पसंख्यक समुदाय घोषित कर सकती हैं, जैसे कर्नाटक ने उर्दू, तेलुगु, तमिल, मलयालम, हिंदी, कोंकणी, मराठी और गुजराती भाषाओं को अपनी सीमा में अल्पसंख्यक भाषा अधिसूचित किया है तथा महाराष्ट्र ने यहूदियों को। भारत के संविधान में अल्पसंख्यक कौन होगा, इसकी व्याख्या नहीं की गई थी। सर्वप्रथम केंद्र सरकार ने अल्पसंख्यकों के लिए राष्ट्रीय आयोग अधिनियम, 1992 बनाया। उसने अक्टूबर 1993 में मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध और पारसी को अल्पसंख्यक घोषित किया। वर्ष 2014 में इसमें जैन को भी जोड़ा गया। प्रत्येक 10 वर्ष पर होने वाली जनगणना में वर्ष 1961 से हिंदू, मुसलमान, ईसाई, सिख, बौद्ध और जैन की गणना प्रकाशित होती आ रही है। वर्ष 1951 की जनगणना में पारसी और यहूदी की भी जनगणना हुई थी, पर वर्ष 1961 के बाद उन्हें 'अन्यऽ के कालम में डाल दिया गया। नौ राज्यों में हिंदुओं को अल्पसंख्यक घोषित करने के लिए वर्ष 2011 की जनगणना को आधार बनाया गया है, जिसके अनुसार जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, अरुणाचल, नगालैंड, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय और लक्षद्वीप में कुल जनसंख्या में हिंदुओं का प्रतिशत 50 से कम है। लद्दाख में हिंदू मात्र 12.11 प्रतिशत ही हैं। संविधान के अनुच्छेद-29 में अल्पसंख्यक वर्गों के हितों के संरक्षण की बात कही गई है, जिसके अनुसार, 'भारत के राज्यक्षेत्र या उसके किसी भाग के निवासी या नागरिकों के किसी विभाग को अपनी भाषा, लिपि या संस्कृति को बनाए रखने का अधिकार होगा।' वहीं संविधान के अनुच्छेद-30 में कहा गया है कि 'अल्पसंख्यक वर्ग को अपनी संस्थाओं की स्थापना और प्रशासन करने का अधिकार होगा।' अगर राज्य और जिला स्तर पर अल्पसंख्यक की पहचान की जाए तो वर्ष 2011 की जनगणना में देश के कुल 640 जिलों में से 110 जिले ऐसे हैं, जहां कुल जनसंख्या में हिंदू जनसंख्या का प्रतिशत 50 प्रतिशत से कम है। यानी वे अल्पसंख्यक हैं। उपरोक्त नौ राज्यों के अलावा हिमाचल प्रदेश के लाहुल स्पीति, हरियाणा के मेवात, उत्तर प्रदेश के रामपुर, बिहार के किशनगंज, सिक्किम के उत्तरी सिक्किम, असम के धुबरी, ग्वालपाड़ा, बारपेटा, मोरीगांव, नवगांव, करीमगंज, हैलाकांडी, बोंगाईगांव एवं दरांग, बंगाल के मालदा, मुर्शिदाबाद एवं उत्तर दिनाजपुर, झारखंड के पाकुड़, लोहरदगा, खूंटी, गुमला, सिमडेगा एवं पश्चिमी सिंहभूम, तमिलनाडु के कन्याकुमारी और केरल के वायनाड, मल्लापुरम, एर्नाकुलम, इड्डुकी एवं कोट्टायम जिलों में हिंदुओं की आबादी 50 प्रतिशत से कम है। ऐसे में समय की मांग है कि अल्पसंख्यक समुदाय की पहचान राज्य या जिला नहीं, बल्कि प्रखंड/सबडिविजन और सर्किल स्तर पर की जाए, क्योंकि देश के अनेक ऐसे जिले हैं, जहां जिला स्तर पर भले ही हिंदू बहुमत में हैं, पर इससे नीचे बड़े भूभाग में वे अल्पमत में हैं और असुरक्षित हैं। उदाहरण के रूप में उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद में छह सबडिविजन हैं, लेकिन छह में से चार-ठाकुरद्वारा, मुरादाबाद, संभल और बिलारी में वे अल्पमत में हैं। बंगाल के उत्तर 24 परगना में नौ, दक्षिण 24 परगना में सात प्रखंड और असम के कछार जिला के पांच सर्किल में से दो में हिंदू अल्पमत में हैं। जिन राज्यों/जिलों/सबडिविजन में मुस्लिम और ईसाई बहुमत में हैं, वहां से हिंदू, सिख, बौद्ध और जैन का पलायन हो रहा है, क्योंकि वहां वे अपने को असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। संविधान के अनुच्छेद-29 एवं 30 में भाषा, लिपि और संस्कृति के संरक्षण के लिए शिक्षण संस्थान के संचालन की बात कही गई थी, पर बाद में केंद्र और राज्य सरकारें तुष्टीकरण के तहत अल्पसंख्यक मंत्रालय और अल्पसंख्यक आयोग गठित करती चली गईं। तुष्टीकरण का वीभत्स रूप तब सामने आया जब पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने सार्वजनिक रूप से घोषित किया कि संसाधनों पर पहला अधिकार 'अल्पसंख्यकों' का है। सर्वोच्च न्यायालय में दायर केंद्र सरकार के हलफनामे में भी राज्य सरकारों को 'भाषाई' अल्पसंख्यक घोषित करने की बात कही गई है, जबकि अल्पसंख्यक नाम लेकर पंथिक/धार्मिक अल्पसंख्यक की बात की जाती है। देश में अल्पसंख्यक का अर्थ मुस्लिम और ईसाई से लगाया जाता है। सवाल है कि क्या मुसलमानों या ईसाइयों की कोई अपनी भाषा या लिपि है, जिसके संरक्षण की आवश्यकता है? कई बार उर्दू को मुसलमानों से जोड़कर देखा जाता है, जो कि पूर्णतः गलत है। मुस्लिम बहुल्य कश्मीर में मुस्लिम आबादी 68.31 प्रतिशत है, पर उर्दू को अपनी मातृभाषा लिखाने वाले मात्र 0.23 प्रतिशत ही हैं। असम में मुस्लिम जनसंख्या 34.22 प्रतिशत है, पर जिन्होंने अपनी मातृभाषा उर्दू लिखवाई है, उनका प्रतिशत मात्र 0.06 है। बंगाल में भी मुस्लिम आबादी 27.01 प्रतिशत है, पर मातृभाषा उर्दू लिखवाने वालों की संख्या मात्र 6.74 प्रतिशत ही है। यानी संविधान के अनुच्छेद-29 एवं 30 में जिस भाषा और लिपि को अल्पसंख्यक मानकर संरक्षण देने की बात है, उसमें मुसलमान नहीं आते, क्योंकि वे जिस राज्य में रहते हैं वहां के लोगों की मातृभाषा को ही अपनी मातृभाषा मानते हैं। कुल मिलाकर देश में कौन-कहां अल्पसंख्यक है इसकी घोषणा और उनकी सुरक्षा तथा विकास का विचार सतही स्तर पर न करके सूक्ष्म स्तर पर होना चाहिए। साथ ही संविधान के अनुच्छेद 29 एवं 30 की आड़ लेकर शिक्षा के नाम पर जो विषवमन और धंधा किया जा रहा है, उस पर भी कड़ाई से रोक लगाई जाना चाहिए।

भये प्रगट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी

अयोध्या में बेहद भव्य तरीके से मनायी गाई रामनवमी, रामलला को लगेगा 50 व्यंजनों का भोग, लाइव प्रसारण भी हुआ अयोध्या में बहुत ही भव्यता के साथ कल रामनवमी का पर्व मनाया गया। यहां से श्रीराम जन्मभूमि के जन्मोत्सव कार्यक्रम का दूरदर्शन और आकाशवाणी पर सीधा प्रसारण हुआ. कोरोना वायरस के कारण बीते दो सालों से त्यौहारों को बड़े रूप में न मना पाने वाले लोग इस बार त्यौहारों को काफी धूमधाम से मनाया . इसी क्रम में राम नगरी अयोध्या में इस बार रामनवमी का पर्व भी काफी बड़े पैमाने पर मनाने की तैयारी है. इतना ही नहीं सीएम योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर इस बार अयोध्या के श्रीराम जन्मभूमि से जन्मोत्सव कार्यक्रम का सीधा प्रसारण भी किया गया . बता दें कि 2020 व 2021 में कोरोना वायरस संक्रमण के कारण अयोध्या में रामनवमी त्यौहार उल्लास से नहीं मनाया गया था. अयोध्या में राम नवमी पर राम जन्मोत्सव का देश-विदेश में रहने वाले राम भक्त घर बैठे कर दर्शन कर पाएं हिंदू धर्म में श्री राम सबसे श्रद्धेय देवताओं में से एक हैं। ये भगवान विष्णु के सातवें अवतार थे। हम बचपन से ही रामायण से जुड़ी कई कहानियां सुनते आ रहे हैं और ये सारी कहानियां हमें काफी प्रेरित भी करती हैं। अपने भक्तों के लिए श्री राम पूर्णता का अवतार हैं. इस चैत्र नवरात्रि को अयोध्या धाम श्री राम जी की जन्मस्थली पर जन्मोत्सव के दिन यानी कल भक्तों का ताता लगा हुआ था दूर-दूर से भक्त राम लला के दर्शन करने के लिए आ रहे थे भीड़ इतनी थी की आप खड़े नहीं हो सकते थे प्रशासन पूरी तन्मयता के साथ जनता की सेवा भक्तों की सेवा में लगा हुआ था उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री माननीय योगी आदित्यनाथ जी का भी आगमन हुआ था हनुमानगढ़ी के दर्शन के पश्चात रामलला के दर्शन किया हुआ मंदिर निर्माण कार्य का भी जायजा लिया चैत्र नवरात्रि और श्रीराम नवमी पर रामचरित मानस, वाल्मीकि रामायण, सुंदरकांड आदि के अनुष्ठान की परंपरा रही है। मंत्रों का जाप भी किया जाता है। उन्हें या उनमें से किसी एक के करने पर इच्छापूर्ति निःसंदेह पूर्ण होगी। धार्मिक शास्त्रों के अनुसार प्रभु श्री राम नाम की शक्ति असीमित है। उनके नाम से लिखे पत?थर तैर गए। उनके द्वारा चलाया गया अमोघ बाण रामबाण अचूक कहलाया तो उनके मंत्र की शक्ति का तो कहना क्या श्री राम के 10 सरलतम मंत्र और उनकी उपासना विधि (1) 'राम' यह मंत्र अपने आप में पूर्ण है तथा शुचि-अशुचि अवस्था में भी जपा जा सकता है। यह तारक मंत्र कहलाता है। (2) 'रां रामाय नमः' सकाम जपा जाने वाला यह मंत्र राज्य, लक्ष्मी पुत्र, आरोग्य व वि?पत्ति नाश के लिए प्रसिद्ध है। (3) 'ॐ रामचंद्राय नमः' क्लेश दूर करने के लिए प्रभावी मंत्र है। (4) 'ॐ रामभद्राय नमः' कार्य की बाधा दूर करने के लिए अवश्व प्रभावी है। (5) 'ॐ जानकी वल्लभाय स्वाहा' प्रभु कृपा प्राप्त करने व मनोकामना पूर्ति के लिए जपने योग्य है। (6) 'ॐ नमो भगवते रामचंद्राय' विपत्ति-आपत्ति के निवारण के लिए जपा जाता है। (7) 'श्रीराम जय राम, जय-जय राम' इस मंत्र का कोई सानी नही है। शुचि-अशुचि अवस्था में जपने योग्य है। (8) श्रीराम गायत्री मंत्र 'ॐ दशरथाय नमः विद्महे सीता वल्लभाय धीमहि तनने रामः प्रचोदयात।' यह मंत्र समस्त संकटों का शमन करने वाला तथा ऋद्धि-सिद्धि देने वाला माना गया है। (9) 'ॐ नमः शिवाय', 'ॐ हं हनुमते श्री रामचंद्राय नमः।' यह मंत्र एकसाथ कई कार्य करता है। स्त्रियां भी जप सकती हैं। साधारणतया हनुमान जी के मंत्र उग्र होते हैं। शिव तथा राम मंत्र के साथ जप करने से उनकी उग्रता समाप्त हो जाती है। (10) 'ॐ रामाय धनुष्पाणये स्वाहाः' शत्रु शमन, न्यायालय, मुकदमे आदि की समस्या से मुक्ति हेतु प्रशस्त है।

श्री राम चरित मानस से भए प्रगट
कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी
अद्भुत रूप बिचारी
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा
निज आयुध भुजचारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला
सोभासिंधु खरारी
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी
केहि बिधि करूं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना
वेद पुरान भनंता
करुना सुख सागर सब गुन आगर
जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी
भयउ प्रगट श्रीकंता
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया
रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी
सुनत धीर मति थिर न रहै ।।
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना
चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई
जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै
माता पुनि बोली सो मति डोली
तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला
यह सुख परम अनूपा
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना
होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं
ते न परहिं भवकूपा
भए प्रगट कृपाला दीनदयाला
कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी
अद्भुत रूप बिचारी
श्री राम । जय राम । जय जय राम
श्री राम जय राम जय जय राम

धरती को बचाने की दिशा में कारगर प्रयास

इंटरगवर्नमेंटल पैनल आन क्लाइमेट चेंज (आइपीसीसी) की एक हालिया रिपोर्ट में यह चिंता जताई गई है कि कार्बन उत्सर्जन में कटौती किए बिना ग्लोबल वार्मिंग को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करना पहुंच से बाहर है। इस काम के लिए ऊर्जा क्षेत्र में बड़े बदलाव की आवश्यकता है और जीवाश्म ईंधन के उपयोग में भारी कमी लानी होगी। हालांकि एक कड़वा सच यह भी है कि तमाम वैज्ञानिक प्रमाणों के बावजूद न तो जीवाश्म ईंधन कंपनियों और सरकारों की जवाबदेही तय हो पा रही है, और न ही उनके खिलाफ कोई खास निषेधात्मक कार्रवाई की जाती है। इसी उदासीनता के चलते आइपीसीसी की छठी आकलन रिपोर्ट की तीसरी किस्त बताती है कि पेरिस समझौते के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए अब शायद आखिरी मौका ही बचा है और इस मौके का फायदा अगले आठ वर्षों में ही उठाया जा सकता है। इस काम के लिए इस दशक के अंत तक उत्सर्जन को कम से कम आधा करने के लिए नीतियों और उपायों को तेजी से लागू करना पड़ेगा। इस रिपोर्ट में विज्ञानियों ने बताया है कि दुनिया अपने जलवायु लक्ष्यों को कैसे पूरा कर सकती है। रिपोर्ट से यह स्पष्ट है कि 2050 तक 'नेट जीरोऽ तक पहुंचना दुनिया को सबसे खराब स्थिति से बचने में मदद करेगा। हालांकि रिपोर्ट यह भी कहती है कि मौजूदा हालात ऐसे हैं कि 1.5 या दो डिग्री तो दूर, हम 2.7 डिग्री की तापमान वृद्धि की ओर अग्रसर हैं। एक और महत्वपूर्ण बात जो यह रिपोर्ट सामने लाती है कि नेट जीरो के नाम पर अमूमन पौधरोपण या कार्बन ओफसेटिंग कि बातें की जाती हैं। मगर असल जरूरत है कार्बन उत्सर्जन को ही

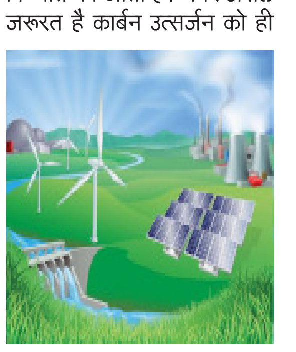

पूरी तरह से कम किया जाए। अब यह जानना महत्वपूर्ण होगा कि इस ताजा रिपोर्ट में विज्ञान की नजर से क्या खास संदेश हैं। एक नजर ऐसे पांच महत्वपूर्ण वैज्ञानिक संदेशों पर हमें डालना चाहिए। पहला, स्वच्छ और अक्षय ऊर्जा की ताकत और भंडारण से चलने वाली एक वैश्विक ऊर्जा व्यवस्था दुनिया के देशों को जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए एक बेहतरीन मौका देगी। जिन देशों में निमन कार्बन नीतियां अपनाई गई वहां उत्सर्जन में गिरावट देखी जा रही है। अक्षय ऊर्जा में भारी प्रगति हुई है। वर्ष 2020 में 280 गीगावाट नई क्षमता जोड़ी गई, जो इसके पिछले वर्ष की तुलना में 45 गीगावाट अधिक है और 1999 के बाद से साल-दर-साल सबसे बड़ी वृद्धि है। साथ ही, उसकी लागत में तेजी से गिरावट जारी है। दूसरा, दुनिया को जीवाश्म ईंधन के बुनियादी ढांचे को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करना शुरू करना चाहिए। मौजूदा बुनियादी ढांचा अकेले ही 1.5 डिग्री सेल्सियस के लक्ष्य तक पहुंचना असंभव बना देगा। अगर कोई नया जीवाश्म ईंधन विस्तार न भी किया जाए, फिर भी मौजूदा ढांचे की वजह से 2025 तक वैश्विक उत्सर्जन 22 प्रतिशत अधिक होगा और 2030 तक 66 प्रतिशत अधिक होगा। साथ ही, मौजूदा ढांचे के चलते दुनिया में 846 गीगा टन कार्बन डाइआक्साइड का उत्सर्जन होना तय है। फिलहाल हालात ऐसे हैं कि कोयले में नए निवेश न करने के साथ ही कोयले से चलने वाले सभी बिजली संयंत्रों को वर्ष 2040 तक बंद करने की आवश्यकता है। अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी का कहना है कि जलवायु लक्ष्यों को पूरा करने के लिए 2040 तक वैश्विक ऊर्जा क्षेत्र का 'नेट जीरोऽ होना जरूरी है। तीसरा, विज्ञानियों का कहना है कि महत्वाकांक्षी पेरिस तापमान लक्ष्यों को पूरा करना संभव है, लेकिन इसके लिए आवश्यकता होगी बढ़े हुए वित्तीय निवेश की। पेरिस के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मीथेन और अन्य अल्पकालिक गैसों सहित ग्रीनहाउस गैसों की पूरी सीरीज में तेजी से शमन की आवश्यकता है।

संक्षिप्त समाचार

डॉ जितेंद्र सिंह बोले- कश्मीर से हिंदुओं को निकालने वाले अब बहा रहे हैं घडियाली आंसू, नरसंहार की जांच होनी चाहिए

जम्मू। प्रधानमंत्री कार्यालय के राज्यमंत्री डा जितेंद्र सिंह ने कहा है कि अब कश्मीरी पंडितों के विस्थापन पर घडियाली आंसू बहाने वाले नेता पंडितों के गुनाहगार हैं। उन्होंने कहा कि कश्मीरी पंडितों के नरसंहार के मामले में जांच होनी चाहिए डा जितेंद्र सिंह ने कहा कि कश्मीर फाइल्स फिल्म के रिलीज होने के बाद अब गुमराह करने की राजनीति करने वाले तीन दशक तक सत्ता पर काबिज रहे। उन्होंने कश्मीरी पंडित नेता टीका लाल टपलू, लस्सा कौल के साथ स्कवार्डन लीडर खनन के हत्यारों को आजाद घूमने दिया। डा जितेंद्र सिंह रविवार को दिल्ली में विश्व कश्मीरी समाज की ओर से आयोजित कार्यक्रम में विचार व्यक्त कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आज कश्मीर केंद्रित राजनीति

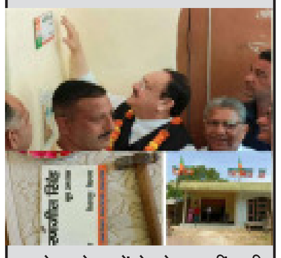

करने वाले दलों के नेता वहीं वही बात कर रहे हैं जो भाजपा 25 साल पहले करती थी। उस समय, ये दल भाजपा पर यह आरोप लगाते थी कि पार्टी लोगों को बांटने की राजनीति कर रही है। केंद्रीय मंत्री ने कहा है कि इतिहास गवाह है कि कश्मीरी पंडितों के विस्थापन से कुछ सत्ताधारी पार्टियों व उनके नेताओं को फायदा हुआ। आतंकवाद के माहौल में उन्हें सत्ता में बने रहने का मौका मिला। जितेन्द्र सिंह ने कहा कि सच तो यह है कि कश्मीर के दलों ने कश्मीरी पंडितों को बचाने के लिए कुछ नही किया। इस दौरान डा जितेन्द्र सिंह ने उन दिनों को याद किया जब युवा डाक्टर के रूप में वह अपने साथियों के साथ वर्ष 1990 की तपतपाती गर्मी में जम्मू के गीताभवन के साथ नगरोटा के जगटी विस्थापित शिविरों में रह रहे पंडितों की मदद करने के लिए जाते थे।

श्री राम जन्मोत्सव की भव्य झांकी देख झूम उठे श्रोता गण

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा। सेक्टर 82 पाकेट 7 सेन्ट्रल पार्क मे चल रही श्री राम कथा के तीसरे दिन कथाव्यास महामंडलेश्वर श्री श्री 1008 स्वामी पंचमानंद जी महाराज ने कहा कि राम जी की कथा का वर्णन करते हुए शिव जी पार्वती जी से कहते हैं कि हे देवी राम के विषय में तर्क नहीं किया जा सकता ,वह मन बुद्धि व वाणी से आगम और अगोचर अगोचर हैं फिर भी संतों, मुनियों ने अपनी विमल बुद्धि से राम के पावन चरित्र का वर्णन किया है। कथाव्यास श्री स्वामी जी ने बताया कि इस धरा धाम पर प्रभु का मानव अवतार तब होता है जब इस धरती पर पाप बढ़ जाता है ब्राह्मण ,संत, गाय , धरती तथा देवता को लोग अश्रद्धा भाव से देखते हैं लोग धन के लालच में अनीति का मार्ग अपना लेते हैं, स्वार्थी हो जाते हैं आपस का प्रेम खत्म हो जाता है परिवार के संबंध स्वार्थ में छिप छिप जाते हैं माँ बेटी को लोग बुरी नजरों से देखने लगते हैं माता-पिता को बात बात में अपमानित करना अपना धर्म समझने लगते हैं देवी देवता की पूजा व दान धर्म की बातों के अनर्गल समझते हैं लोग गुरु का तिरस्कार करने लगते हैं, केवल धन ही जीवन का मुख्य अंग बन जाता है ,चारों तरफ के अत्याचार से लोग त्रस्त हो जाते हैं तब प्रभु श्री राम धरा धाम पर अवतरित होते हैं तुलसीदास मानस मे दर्शन कराते हैः असुर मारि थापहिं सुरन, राखहि निज श्रुति सेतु। भगवान प्रकट होकर आसुरी शक्तियों से उन लोगों का संघार कर सुख वशांति की स्थापना करते हैं धर्म को पुनः स्थापित कर सनातन धर्म

की रक्षा करते हैं आज रामनवमी के पावन तिथि है भगवान का प्राकट्य भी आज ही के दिन अयोध्या नरेश चक्रवर्ती सम्राट दशरथ के यहां हुआ था आज राम कथा के प्रसंग में वही अवसर व पावन तिथि पड़ गई है सुंदर सुंदर झांकियों से सजा यह कथा पंडाल भक्तों की अभेद्य भक्ति का ही प्रतीक है ।आज हिंदू समाज ,धर्म व देश तीनों ही घोर संकट में हैं। राजनेता राज धर्म छोड़ चुके हैं वेअज्ञानी व धर्म विरोधी होते जा रहे है।वह हिंदुस्तान में ही हिंदू धर्म के पतन पर आनंदित होते हैं हिंदुओं के पलायन पर खुश होते हैं संस्कार हीन समाज की रचना हेतु काले कानून बनाते हैं अब हमें रामावतार की शुभ घड़ी में राष्ट्र व धर्म तथा समाज की रक्षा का संकल्प लेना होगा भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के प्रतीक टीका चोटी व संध्या बंधन आदि की ओर बढ़ कर अध्यात्म से जुड़े और जोड़ें इस मौके पर आचार्य विश्व नाथ त्रिपाठी,गौरव जी, प्रमोद भारद्वाज, एन के सोलंकी, रवि राघव,संजय पाण्डेय,गोरे लाल,अंगद सिंह तोमर, राघवेन्द्र दूबे,मुकेश रावत,धर्मेन्द्र सिंह,सिया राम,राजेश गुप्ता,सर्वेश तिवारी,राजबीर,गुरमेल सिंह,बलराम,प्रमोद श्रीवास्तव,प्रदीप तोमर,आलोक कुमार,अमितेश सिंह,हरि शंकर सिंह,राजेश पाठक, गिरिराज,रमेश चंद्र,अरविंद परिहार,विनय त्रिवेदी,सी एल तिवारी,शिव चौधरी,विष्णु शर्मा,पंकज झा,के के शर्मा,सतपती संगम प्रसाद मिश्र,हंस मणि शुक्ल ,रतन भारद्वाज आदि गणमान्य लोग मौजूद रहे ।

अरविंद केजरीवाल की लक्ष्मणरेखा ने हरियाणा में रोके कई पूर्व विधायकों के कदम, पेंशन पर बनी दुविधा

चंडीगढ़। पंजाब में आम आदमी पार्टी के सत्ता में हासिल करने के बाद हरियाणा में भी पूर्व विधायकों और विभिन्न दलों के नेताओं का रुख इस पार्टी की ओर हो रहा है। लेकिन आम आदमी पार्टी के कन्वीनर व दिल्ली के मुख्यमंत्री की लक्ष्मणरेखा के कारण कई विधायक दुविधा में पड़ गए हैं। दरअसल, आम आदमी पार्टी की ' एक विधायक-एक पेंशन' की पालिसी ने हरियाणा के तमाम उन पूर्व मंत्रियों और पूर्व विधायकों की मुश्किल बढ़ा दी है, जो अपने-अपने मौजूदा दलों में अहमियत नहीं मिलने की वजह से अरविंद केजरीवाल के पाले में आने की कोशिश में हैं। प्रदेश में हाल-फिलहाल विधानसभा से 262 पूर्व विधायक और पूर्व मंत्री पेंशन ले रहे हैं। इनमें काफी पूर्व विधायक ऐसे हैं, जो उम्रदराज हो चुके और बहुत से पूर्व विधायक अपने राजनीतिक भविष्य को सुरक्षित रखने के लिए आम आदमी पार्टी की तरफ देख रहे हैं। इन पूर्व विधायकों को 2018 में करीब 23 करोड़ रुपये की पेंशन मिलती थी, जो अब बढ़कर 31 करोड़ रुपये के आसपास हो गई है। पंजाब में आम आदमी पार्टी ने एक विधायक-एक पेंशन का सिद्धांत लागू कर दिया है। हालांकि आम आदमी पार्टी के कई मौजूदा विधायक अपनी पार्टी के इस फैसले से कतई खुश नहीं हैं, लेकिन नई-नई सरकार में साझीदार यह विधायक चाहकर भी अपने नेता की नीति का विरोध नहीं कर पा रहे हैं। हरियाणा में किसी विधायक या पूर्व विधायक को यह उम्मीद नहीं थी कि पंजाब में लागू इस नीति का उन पर भी असर पड़ सकता है। हाल ही में अपनी बेटी चित्रा सरवारा के साथ आम आदमी पार्टी में शामिल हुए पूर्व मंत्री निर्मल सिंह ने अपनी चार में से तीन पेंशन छोड़कर हरियाणा के उन नेताओं के लिए मुश्किल पैदा कर दी, जो आम आदमी पार्टी में

शामिल होने का इरादा रखते हैं। साल 2019 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की टिकट न मिलने पर दोनों पिता-पुत्री ने अंबाला छावनी व अंबाला शहर से निर्दलीय चुनाव लड़ा था। हालांकि दोनों चुनाव हार गए थे, लेकिन अंबाला में चित्रा सरवारा ने मौजूदा गृह मंत्री अनिल विज के सामने तगड़ी चुनौती पेश कर दी थी। माना जाता है कि यदि उन्हें कांग्रेस का टिकट मिल गया होता तो विज को जीत के लिए संकट का सामना करना पड़ सकता था। यह अलग बात है कि विज का स्वयं का जनाधार है और उन्हें किसी अन्य राजनीतिक सहारे की जरूरत नहीं है। निर्मल सिंह पूर्व सीएम भूपेंद्र सिंह हुड्डा के करीबी हैं, जबकि चित्रा सरवारा सांसद दीपेंद्र सिंह हुड्डा की टीम की नेता रही हैं। हरियाणा में कई मौजूदा विधायक ऐसे हैं, जो 2024 के चुनाव के समय पूर्व हो जाएंगे। कुछ विधायक दूसरी बार चुनकर आए हैं। उनकी गिनती उन 263 पूर्व विधायकों में बढ़ जाएगी, जो अभी विधानसभा से पेंशन ले रहे हैं। कुछ विधायक ऐसे भी हैं, जिनके परिवार का गुजारा सिर्फ अपनी पेंशन पर ही चलता है। ऐसे में उन्हें आम आदमी पार्टी में शामिल होने से पहले कई बार सोचना पड़ेगा। हालांकि पेंशन की राशि और सुरक्षित भविष्य में से यदि उन्हें कोई एक चुनना पड़े तो पार्टी में शामिल होना उनके लिए फायदे का सौदा साबित हो सकता है, क्योंकि राज्य में कई पूर्व मंत्री और पूर्व विधायक ऐसे हैं, जो पूरी तरह से साधन संपन्न हैं और उन्हें अपनी पेंशन छोड़ने से कोई खास असर भी नहीं पड़ने वाला है। एक विधायक-एक पेंशन के मुद्दे पर दो राज्यों के सीएम आमने-सामने हो गए हैं। हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की एक विधायक-एक पेंशन की सलाह पर पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि केजरीवाल की बुद्धि ठीक नहीं है। इसलिए उन्हें पानीपत में गुरु तेग बहादुर जी के 400वें सालाना प्रकाश पर्व पर आना चाहिए। यदि वे आएंगे तो उनकी बुद्धि ठीक हो जाएगी।

लद्दाख : पैंगोंग झील के बीच एसयूवी चलाते युवकों का वीडियो हो रहा वायरल

लेह। बर्फीले रेगिस्तान लद्दाख में भारत-चीन सीमा पर स्थित पैंगोंग लेक जिसे पांगोंग त्सो के नाम से

भी जाना जाता है, देश-विदेश से आने वाले पर्यटकों के लिए हमेशा से ही आकर्षण का केंद्र रही है। लगभग 4500 मीटर की ऊंचाई पर हिमालय में स्थित इसी झील के बीच एसयूवी चलाते कुछ युवकों का वीडियो सुबह से वायरल हो रहा है। अपने से तो इन युवकों ने झील की खूबसूरती के बीच कार चलाकर प्राकृति का आंदन लेते हुए ये वीडियो शेयर किया है परंतु ट्वीटर पर यह वीडियो देख लोग उन्हें खूब लताड़ लगा रहे हैं। वीडियो के नीचे ट्वीट करते हुए अपनी-अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहे लगभग सभी लोगों ने इसे शर्मनाक बताते हुए कहा कि इन युवकों ने न सिर्फ झील की खूबसूरती को नुकसान पहुंचाने का प्रयास किया है बल्कि इसे दूषित भी कर दिया। हद तो यह है कि जो यूवक झील में एसयूवी चला रहे हैं, उन्होंने किनारे पर शराब की बोतलें भी रखी हैं। कई लोगों ने तो इन युवकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की लद्दाख प्रशासन से मांग भी की है।लेह से ही संबंध रखने वाले युवा कलाकार जिग्मत लद्दाखी ने इस वीडियो को अपने ट्वीटर हैंडल से शेयर करते हुए लिखा कि मैं फिर से एक और शर्मनाक वीडियो शेयर कर रहा हूं। ऐसे गैरजिम्मेदार पर्यटक लद्दाख को मार रहे हैं। क्या आप जानते हैं।

युवाओं ने किया रामनवमी पर विशाल भंडारे का आयोजन किया

(आधुनिक समाचार सेवा)
देव मणि शुक्ल

नोएडा।रामनवमी के अवसर पर रविवार को युवा संगठन एवं नव ऊर्जा युवा संस्था की ओर से सेक्टर 45 खजूर कॉलोनी शिव मंदिर में विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। गत वर्षी की भांति इस वर्ष

भी भण्डारे में शुद्ध देसी घी से बनी पूरी - सब्जी और हलवे के प्रसाद का वितरण किया गया। जिसे सभी भक्तों एवं श्रद्धालुओं ने पूरी श्रद्धा के साथ ग्रहण किया और प्रसाद का आनन्द लिया। भंडारा प्रारम्भ होने से पहले युवा साथियों ने भगवान श्री राम की पूजा-अर्चना की तथा कन्या पूजन किया। भंडारा प्रातः शुरू हुआ और सांय 4 बजे तक चलता रहा वितरण स्थल पर प्रसाद ग्रहण करने के लिए दिनभर श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रही। सभी युवा साथी प्रसाद वितरण के लिए तन - मन एवं पूरी लगन से लगे रहें इस मौके पर मुख्य अतिथि उच्च न्यायालय के अधिवक्ता एवं केंद्र सरकार के परामर्शदाता मनीष मोहन ने कहा कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम ने वेदों के अनुसार जीवन जीकर आदर्श स्थापित किया। इस पुण्य कार्य में सभी ने बढ़- चढ़ कर हिस्सा लिया और भरपूर सहयोग दिया। इस अवसर पर विक्की चौधरी, दीपक मिश्रा, चंद्रमा मद्धेशिया, रोहित शर्मा, राजू, सुनील राजभर, जितेंद्र चौधरी, संदीप पाठक, भावेश मिश्रा, सत्यवान, मोहित पाराशर, कौशल जी, पवन, धर्मेंद्र, सूर्यकांत शुक्ला, सुधीर राय, हिमांशु चौहान, धीर सिंह, दीप्ति रंजन, मनीष गुप्ता, राकेश गुप्ता, सुशांत, अजय गुप्ता, जीत सिंह, अजय कुमार एवं बंटी सिंह भी दिन भर प्रसाद वितरण कार्य में लगे रहे एंव सध्या के समय भण्डारे को सम्पन्न किया।

हिमाचलः जेपी नड्डा ने भाजपा बूथ अध्यक्ष के घर पहुंचकर दीवार पर लगाई नेम प्लेट जानिए कौन हैं यह कार्यकर्ता

बिलासपुर। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा हिमाचल प्रदेश के चार दिवसीय दौरे के तहत आज बिलासपुर में अपने गृह जिला में हैं। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने स्वयं एक कार्यकर्ता के घर पहुंचकर उनके नाम की प्लेट दीवार पर लगाई। जेपी नड्डा ने खुद हथौड़ी से दीवार पर कील गाड़कर कार्यकर्ता के नाम की प्लेट लगाई। नड्डा ने निचली भटेड पंचायत के देलग गांव में बूथ अध्यक्ष चरणजीत सिंह के घर पहुंचे। उन्होंने स्वयं बूथ अध्यक्ष के नाम की प्लेट लगाकर कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाया। इसके बाद उन्होंने सदर विधानसभा बिलासपुर हल्के के कई क्षेत्रों का दौरा किया और अपने समय के कार्यकर्ताओं के साथ मुलाकात करते हुए पुराने दिनों को याद किया। इस दौरान

सदर विधायक सुभाष ठाकुर के घर में उनके माता-पिता के निधन पर शोक व्यक्त करने भी जगत प्रकाश नड्डा पहुंचे। नड्डा ने सोमवार को सदर विधानसभा क्षेत्र की करीब 15 पंचायतों का दौरा किया और विकास कार्यों का जायजा भी लिया। इस दौरान जगत प्रकाश नड्डा ने पहाड़ी भाषा में बात करते हुए लोगों का दिल जीता। नड्डा ने गांव की महिलाओं को कहा कि राजी है, यानी आप ठीक हो। चरणजीत सिंह निचली भटेड से भाजपा के बूथ अध्यक्ष हैं। वह करीब एक साल पहले ही बूथ अध्यक्ष बने हैं। चरणजीत एक किसान हैं और कुछ समय पहले ठेकेदारी का कार्य भी शुरू किया है। उनकी पतने करुणा देवी ने बताया कि जगत प्रकाश नड्डा उनकी शादी में भी आए थे। उनके ससुर रूप सिंह सेवानिवृत्त सैनिक और दादा गंगा राम के साथ जगत प्रकाश नड्डा के अच्छे संबंध रहे हैं।

शिकायत सुन जनता दरबार में चौंके सीएम नीतीश, अधिकारी को फोन कर कहा- तुरंत संज्ञान लीजिए

पटना। जनता के दरबार में मुख्यमंत्री कार्यक्रम आज फिर से शुरू हो गया। सीएम नीतीश कुमार का यह कार्यक्रम लगभग दो महीने के बाद शुरू किया गया है। कार्यक्रम के दौरान सीएम नीतीश कुमार स्वास्थ्य विभाग, समाज कल्याण विभाग, सामान्य प्रशासन, आइटी आदि से जुड़ी समस्याओं को सुन रहे हैं। कार्यक्रम के दौरान विभाग से जुड़े आला अधिकारी भी मौजदू हैं। वहीं पूणिर्या से आए एक व्यक्ति ने जनता के दरबार में मुख्यमंत्री कार्यक्रम में सीएम से यह शिकायत करते हुए कहा कि हमारे क्षेत्र में स्वास्थ्य केन्द्र पर दबंगों ने कब्जा कर लिया है। शिकायत सुन मुख्यमंत्री ने आश्चर्य जताया और अधिकारियों को तुरंत इस मामले संज्ञान लेने के लिए कहा। मुंगेर से आई एक फरियादी ने सीएम नीतीश कुमार के सामने आपदा प्रबंधन विभाग से जुड़ी शिकायत

की। फरियादी ने कहा कि उनकी बेटी की मौत एक साल पहले सर्पदंश की वजह से हो गई थी, लेकिन सरकार की तरफ से तय मुआवजे की राशि नहीं मिली। शिकायत सुनने के बाद सीएम नीतीश कुमार ने तुरंत आपदा प्रबंधन विभाग के सचिव को फोन लगाया और शिकायत का जिक्र करते हुए तुरंत मामले को देखने के बाद सहायता राशि देने का आदेश दिया। भागलपुर से आए एक शिकायतकर्ता ने कहा कि हमारे इलाके में स्वास्थ्य केन्द्र का संचालन प्राइवेट मकान में हो रहा है। बिल्डिंग के लिए जमीन भी मुहैया करवा दिया गया है। लेकिन भवन का निर्माण नहीं हो रहा है। इस पर सीएम ने स्वास्थ्य विभाग के आला अधिकारी को फोन कर मामले की जानकारी दी और इस पर संज्ञान लेने को कहा। मुख्यमंत्री के जनता दरबार में ज्यादातर शिकायतें शिक्षा और स्वास्थ्य विभाग से जुड़ी हुईं आ रही हैं। गौरतलब है कि सीएम के जनता के दरबार के कार्यक्रम में शामिल होने के लिए वेब पोर्टल के जरिए रजिस्ट्रेशन कराया जाता है। इसके लिए आधार कार्ड, जन्म तिथि और मोबाइल नंबर की आवश्यकता होती है।

बाबा बर्फानी के भक्तों के लिए खुशखबरी, आज से अमरनाथ यात्रा के रजिस्ट्रेशन शुरू, इन बातों का रखें ध्यान

नई दिल्ली। बाबा बर्फानी के भक्तों के लिए खुशखबरी है। 11 अप्रैल यानी सोमवार से बाबा बर्फानी के दर्शन की इच्छा रखने वाले भक्तों के लिए रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया शुरू हो गई

है। अमरनाथ यात्रा के इच्छुक श्रद्धालु श्री अमरनाथ श्राइन बोर्ड की वेबसाइट पर जाकर अपना रजिस्ट्रेशन कर सकते हैं। 43 दिन तक चलने वाली इस यात्रा का समापन 11 अगस्त को किया जाएगा। इस आयु वर्ग के श्रद्धालुओं को मिलेगा यात्रा का मौकाः अमरनाथ यात्रा के लिए आयु सीमा तय की गई है। यात्रा पर जाने वाले की कम से कम आयु सीमा 13 साल से लेकर 75 साल तक होनी चाहिए। यानी इस आयु वर्ग के लोग ही अमरनाथ यात्रा पर जाने के लिए पात्र होंगे। इसके साथ ही छह महीने से ज्यादा गर्भावस्था वाली महिलाओं को यात्रा की अनुमति नहीं होगी। साथ ही यात्रा के लिए दिए गए फॉर्मेट में भरा गया एप्लीकेशन बेहद जरूरी होगा। पंजीकरण की प्रक्रियाः मेडिकल रिपोर्ट लेकर श्रद्धालु जम्मू एंड कश्मीर बैंक की ब्रांच में जाकर आफलाइन पंजीकरण कराएंगे। इसके लिए जिला अस्पताल का पर्चा, चिकित्सकों की रिपोर्ट, आधार कार्ड के साथ चार फोटो आवेदन फार्म और पंजीकरण शुल्क के 100 रुपये देने होंगे, उसके बाद बैंक से पंजीकरण फार्म मिलेगा, जिसे भरकर देने के बाद बैंक यात्रा की निर्धारित तिथि प्रदान करेगा। साथ ही श्रद्धालुओं को अमरनाथ श्राइन बोर्ड की बेवसाइट पर आनलाइन पंजीकरण की सुविधा भी मिलेगी, जिसमें मेडिकल के बाद एक श्रद्धालु चार व्यक्तियों का एकसाथ पंजीकरण आनलाइन फीस जमा करके कर सकता है।

पत्रकार लक्ष्मीकांत भक्ति भाव चतुर्वेदी को पितृ शोक

(आधुनिक समाचार सेवा)
दुर्गेश कुमार गुप्ता

ब्यौहार । वरिष्ठ पत्रकार लक्ष्मीकांत चतुर्वेदी के पिता रमाकांत चतुर्वेदी का हृदय गति रुक जाने से निधन हो गया वे 74 वर्ष के थे अपना भरा पूरा परिवार छोड़कर चले गये उनके निधन पर ब्यौहारी के पत्रकारों द्वारा शोक व्यक्त करते हुए कहा गया है कि चतुर्वेदी परिवार के दुख भारी दुख की इस घड़ी में संबल प्रदान करें शोक व्यक्त किया गया शोक व्यक्त करने वालों में प्रमुख रूप से मुनींद्र तिवारी शत्रुघन चतुर्वेदी डॉ अशोक तिवारी, विनय द्विवेदी, सतीश तिवारी, दुर्गेश गुप्ता, सिद्धार्थ अगिन्होत्री, मों चांद फाखिर, सुभाष द्विवेदी बुडवा, सूर्यभान यादव, विष्णुदास वैश्य, शिव कुमार गुप्ता श्रीनिवास मिश्रा नीलेश सोनी एवं सभी पत्रकारों द्वारा शोक संवेदना प्रकट करते हुए भगवान को उनकी मृत आत्मा को शांति प्रदान करने की कामना की है।

हरियाणा में धूल भरी आंधी, फिर बदलेगा मौसम का मिजाज, दो दिन होगी बारिश

करनाल। भीषण गर्मी व लू की मार झेल रहे लोगों के लिए राहत भरी खबर है। मौसम विभाग ने 12 व

15 अप्रैल को दो पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होने की संभाावना जताई है। जो 13 से 17 अप्रैल तक राहत प्रदान कर सकते हैं। पहाड़ियों पर पश्चिमी विक्षोभ और उत्तरी मैदानों पर प्री-मानसून गतिविधियां देंगी गर्म मौसम से कुछ राहत देंगे। मार्च के महीने में लगभग चार से पांच पश्चिमी विक्षोभ पश्चिमी हिमालय तक पहुंचे। उनमें से कोई भी सक्रिय नहीं था और उत्तर भारत की पहाडि़यों पर बारिश या बर्फबारी के रूप में कोई महत्वपूर्ण मौसम गतिविधि देने में सक्षम नहीं था। अप्रैल के पहले दस दिनों में भी कोई महत्वपूर्ण पश्चिमी विक्षोभ नहीं देखा गया है। पश्चिमी और उत्तर-पश्चिम दिशा से शुष्क और गर्म हवाएँ उत्तरी मैदानी इलाकों में जारी रहीं, जिससे कई स्थानों पर लू की स्थिति बनी रही। हिमाचल प्रदेश के जम्मू संभाग और उत्तराखंड के कुछ हिस्सों में भी लू देखी गई हरियाणा, दिल्ली, पश्चिम उत्तर प्रदेश और पंजाब के कुछ हिस्सों में 12 अप्रैल तक तेज धूप जारी रह सकती है। यह उत्तरी मैदानी इलाकों को प्रभावित करने वाली गर्मी की लहरों के सबसे लंबे दौरों में से एक हो सकता है। एक पश्चिमी विक्षोभ के 12 अप्रैल की रात को पश्चिमी हिमालय के पास पहुंचने की उम्मीद है और दूसरा पश्चिमी विक्षोभ 15 अप्रैल के आसपास होगा। 13 अप्रैल से पश्चिमी हिमालय में बारिश और गरज के साथ मुख्य गतिविधियां शुरू होंगी। 13 से 17 अप्रैल के बीच पंजाब, हरियाणा, दिल्ली और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में गरज के साथ बारिश, धूल भरी आंधी और हल्की गरज के साथ छिटपुट प्री-मानसून गतिविधियाँ हो सकती हैं। उस अवधि के दौरान उपरोक्त क्षेत्रों से गर्मी की लहर कम हो सकती है। केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान के मुताबिक इस समय विदर्भ से दक्षिण आंतरिक कर्नाटक तक एक निम्न दबाव की रेखा मराठवाडा और उत्तरी आंतरिक कर्नाटका होकर गुजर रही है। एक चक्रवाती हवाओं का क्षेत्र दक्षिण-पश्चिम बंगाल की खाड़ी के ऊपर बना हुआ है, जो मध्य क्षोभमंडल स्तर तक फैल रहा है। 12 अप्रैल की रात तक पश्चिमी हिमालय के पास एक नया पश्चिमी विक्षोभ आने की संभावना है।

'केजीएफ 2' को लेकर क्रेजी हुए लोग, 2000 पहुंचा टिकटों का रेट, सुबह 6 बजे से पहला शो

नई दिल्ली। सुपरस्टार यश की मोस्ट अवेटेड फिल्म 'केजीएफः चैप्टर 2' इस हफ्ते रिलीज हो रही है। इस फिल्म की एडवांस बुकिंग शुरू हो चुकी है, साथ ही ये रिपोर्ट्स सामने आ रही हैं कि इसके हिन्दी वर्जन ने बॉलीवुड की कई सुपरहिट फिल्मों को एडवांस बुकिंग में मात दे दिया है। इस फिल्म ने एडवांस बुकिंग में आरआरआर को पहले ही पीछे छोड़ दिया है। केजीएफ 2 की रिलीज को लेकर लोग इतने एक्साइटेड है कि खबर है कि महाराष्ट्र में कई जगहों पर फिल्म की शो टाइम को बढ़ाकर सुबह 6 बजे से शुरू कर दिया गया है। केजीएफः चैप्टर 2 की एडवांस बुकिंग को लेकर रिपोर्ट्स हैं कि दिल्ली व मुंबई के कुछ खास सिनेमाघरों में टिकटों के रेट 2000

प्रति टिकट तक पहुंच गए हैं। किसी फिल्म के रिलीज से पहले इतना बज, बॉक्स ऑफिस पर कमाई के नए रिकॉर्ड बनने की तरफ इशारा कर रहा हैं। 120 करोड़ की लागत से बनी फिल्म की एडवांस बुकिंग इतनी शानदार है कि इसके फर्स्ट डे के बॉक्स ऑफिस कलेक्शन का अंदाजा लगाना ज्यादा मुश्किल नहीं होगा। फिल्म को लेकर दर्शकों में इतने एक्साइटमेंट के चलते दिल्ली व मुंबई के कुछ सेलेक्ट सिनेमाघरों में टिकटों के दाम भी बढ़ गए हैं। इन खास थिएटर्स में मुंबई की टिकटें 1500 रुपये प्रति टिकट की दर से बुक हो रही हैं, तो वहीं खबर है कि दिल्ली में ये दाम 2000 रुपये प्रति टिकट जा पहुंचे हैं। खबर तो ये भी है कि मुंबई और पुणे में फिल्म 'केजीएफ 2' के पहले दिन के पहले शो सुबह 6 बजे शुरू होने जा रहे हैं। केजीएफ चैप्टर 2 में कन्नड़ सुपरस्टार यश के अलावा रवीना टंडन, प्रकाश राज और संजय दत्त और श्रीनिधि शेट्टी लीड रोल में है। डायरेक्टर प्रशांत नील की ये फिल्म करीब छह हजार स्क्रीन्स पर पूरे देश में रिलीज हो रही है। फिल्म 14 अप्रैल को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

दीपिका पादुकोण को याद आया बचपन, एक्ट्रेस क्लास की कविता को शेयर करते हुए कही ये बात

नई दिल्ली। बॉलीवुड अभिनेत्री दीपिका पादुकोण सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय रहती हैं। वह अपने फैंस से जुड़े रहने के लिए अक्सर खास तस्वीरें और वीडियो शेयर करती रहती हैं। इतना ही नहीं दीपिका पादुकोण सोशल मीडिया के जरिए अपनी निजी

ज़िंदगी के बारे में भी खास खुलासे करती रहती हैं। अब उन्होंने अपनी बचपन से जुड़ी खास यादों को शेयर किया दीपिका पादुकोण ने अपने आधिकारिक इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक कविता शेयर की है। अभिनेत्री इंस्टाग्राम अकाउंट पर काफी सक्रिय रहती हैं। दीपिका पादुकोण की यह कविता उनकी सातवीं क्लास की है। उस समय वह केवल 12 साल की थीं। इस बात की जानकारी दीपिका पादुकोण ने कविता के साथ खास कैप्शन शेयर करके दी है। जिसे अभिनेत्री के फैंस पसंद कर रहे है दीपिका पादुकोण ने कविता के कैप्शन में लिखा, 'कविता लिखने का मेरा पहला और आखिरी प्रयास था! यह सातवीं क्लास की बात थी। मैं 12 साल की थी। कविता का शीर्षक 'आई एम' था। हमें पहले 2 शब्द दिए गए थे जो आप देख सकते हैंष्ठ और बाकी इतिहास है!' सोशल मीडिया पर दीपिका पादुकोण की यह कविता तेजी से वायरल हो रही है। अभिनेत्री के फैंस कविता को खूब पसंद कर रहे हैं। साथ ही कमेंट कर अपन बात करें दीपिका पादुकोण के वर्कफ्रंट की तो वह इन दिनों फिल्म पठान को लेकर सुर्खियों में हैं। हाल ही में इस फिल्म की रिलीज डेट की घोषणा हुई थी। इस फिल्म की घोषणा बेहद खास टीजर के साथ की गई। पठान के टीजर की शुरुआत जॉन अब्राहम के साथ होती है, जो शाह रुख खान के किरदार के बारे में बताते हुए कहते हैं कि हम देश में धर्म और जाति के नाम पर नाम रखते हैं, लेकिन उसके पास यह कुछ नहीं था। जॉन के बाद दीपिका पादुकोण भी शाह रुख खान के किरदार के बारे में थ टीजर के आखिरी में पठान के रूप में शाह रुख खान की एंट्री होती। हालांकि एक मिनट के इस टीजर में शाह रुख खान के लुक पर से पर्दा नहीं उठाया गया। टीजर में उनकी एक धुंधली तस्वीर दिखाई है। यशराज प्रोडक्शन के बैनर तले बन रही फिल्म पठान में शाह रुख खान के साथ दीपिका पादुकोण और जॉन अब्राहम मुख्य भूमिका में होगीं। वहीं इस फिल्म का निर्देशन सिद्धार्थ आनंद ने किया है।

निया शर्मा ने क्रॉप टॉप और शॉर्ट ड्रेस पहन दिया पोज, कहा, 'प्यार में नहीं कि पड़ने का कर रही हूं प्रयास'

नई दिल्ली। निया शर्मा ने इंस्टाग्राम पर अपनी एक क्रॉप टॉप और शॉर्ट्स पहने तस्वीर शेयर की है इसमें उन्हें बालकनी में खड़े होकर नहीं गिरने का प्रयास करते हुए देखा जा सकता है वह कैमरे की ओर देखकर फोटो क्लिक करा रही है उनके पीछे मुंबई की भव्य निया शर्मा ने

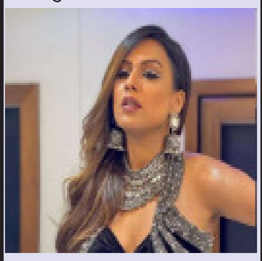

तस्वीरें शेयर करते हुए लिखा है, 'यह मैं हूं, जो प्यार में नहीं पड़ने का प्रयास कर रही हूं, अपने पूरे बाहुबल से' निया शर्मा की तस्वीरें इंस्टाग्राम पर वायरल हो गई ह इसे 13 घंटे में 64000 से ज्यादा लाइक्स मिल चुके हैंत निया शर्मा ने तस्वीरें शेयर करते हुए लिखा है, 'यह मैं हूं, जो प्यार में नहीं पड़ने का प्रयास कर रही हूं, अपने पूरे बाहुबल से' निया शर्मा की तस्वीरें इंस्टाग्राम पर वायरल हो गई है इसे 13 घंटे में 64000 से ज्यादा लाइक्स मिल चुके है वहीं इसपर 400 से ज्यादा कमेंट किए जा चुके हैं।

राजामौली की 'आरआरआर' ने ध्वस्त किए सारे रिकॉर्ड, 1000 करोड़ के पार पहुंची फिल्म

नई दिल्ली। एसएस राजामौली की बहुचर्चित फिल्म आरआरआर ने बॉक्स ऑफिस को अपनी धुआंधार कमाई से तहस नहस कर दिया है। फिल्म ने नया रिकॉर्ड बनाते

हुए दुनियाभर में 1000 करोड़ से ज्यादा की कमाई कर ली है। इस सुपरहिट फिल्म में राम चरण, जूनियर एनटीआर, आलिया भट्ट और अजय देवगन जैसे स्टार हैं। अब तक केवल दो फिल्में दंगल और बाहुबली 2ः द कन्क्लूजन ने ग्लोबल लेवल पर 1000 करोड़ का आंकड़ा पार किया है। इस एपिक एक्शन ड्रामा फिल्म ने शुक्रवार को 5 करोड़ रुपए कमाए। ये भी अपने आप में एक रिकॉर्ड है कि कोरोना महामारी के बाद किसी भी फिल्म की तीसरे हफ्ते में ये सबसे बड़ा कलेक्शन है। आरआरआर हाल ही में सलमान खान की बजरंगी भाईजान और आमिर खान की सीक्रेट सुपरस्टार को पीछे छोड़ते हुए, अब तक की तीसरी सबसे ज्यादा कमाई करने वाली भारतीय फिल्म बन गई है। बॉक्स ऑफिस इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक, आरआरआर (हिंदी) अभी भी 'द कश्मीर फाइल्स' के आंकड़ों को मात देने की दौड़ में है क्योंकि तीसरे शुक्रवार को फिर से बहुत अच्छी रफ्तार पकड़ी है। राजामौली की इस फिल्म ने सिर्फ बेल्ट में कुल मिलाकर 221 करोड़ से ज्यादा की नेट कमाई की है। हालांकि आरआरआर के लिए आगे का सफर इतना आसान नहीं है, इसी हफ्ते रिलीज हो रही यश स्टारर 'केजीएफ 2' के आने से कलेक्शन पर काफी असर पड़ सकता है।

वेटरन एक्टर शिव कुमार सुब्रमण्यम का निधन

नई दिल्ली। बॉलीवुड सिनेमा से बुरी खबर सामने आई है। '1942ः ए लव स्टोरी', 'कमीने',

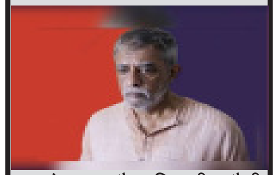

'2 स्टेट्स' और 'हिचकी' जैसी शानदार फिल्मों में नजर आ चुके अभिनेता शिव कुमार सुब्रमण्यम का निधन हो गया है। उनके निधन से बॉलीवुड में शोक का माहौल है।

रोल के बदले मांगी न्यूड तस्वीरें कास्टिंग काउच का शिकार बना 'इश्कबाज' फेम ये एक्टर

नई दिल्ली। बॉलीवुड और छोटे पर्दे की स्याह हकीकत में से एक हैं 'कास्टिंग काउच'। इंडस्ट्री के लगभग हर एक्टर और एक्ट्रेस ने कभी न कभी तो इसका सामना किया ही होता है। कुछ लोग सामने आकर बोलते हैं, तो वहीं कुछ चुप रहना पसंद करते हैं। इसी क्रम में एक टीवी वाले अंकित सिवाच ने एचटी के साथ इंटरव्यू में अपने साथ हुए कास्टिंग काउच के बारे में खुलकर बात की। यूपी के मेरठ से आने वाले अंकित ने बतौर मॉडल अपना करियर शुरू किया था। करियर के अपने शुरुआती अनुभवों को याद करते हुए अंकित ने बताया कि अपने खराब कहा कि उन्हें पहले लगता था कि हर कोई उच्छा होता है, इसलिए ऐसी चीजों को नजर अंदाज कर देते थे। एक घटना का जिसक्र करते हुए अंकित ने कहा कि जब 'उनकी न्यूड तस्वीरें मां पार्टियों में बुलाया जाता था जिनसे काम से कोई लेना देना नहीं था। ये एक तरह का

एक्टर ने अब अपनी आपबीती सुनाई है। एक्टर ने बताया कि कैसे रोल दिलाने के नाम पर उनसे न्यूड तस्वीरें मांगी गईं थीं। छोटे पर 'इश्कबाज', 'बेहद 2' और 'लाल इश्क' जैसे सीरियल्स में लीड रोल प्ले करने अनुभवों के चलते उन्होंने एक्टिंग और मॉडलिंग, दोनों को ही छोड़ने का मन बना लिया था। अंकित ने कहा कि वह हैरत में पड़ जाते थे जब सीरियल्स में रोल देने के नाम पर उन्हें अजीब पाटिर्यों में बुलाया जाता था। एक्टर ने हैरासमेंट ही था जिसके लिए मैं तैयार नहीं था।' मेरठ से दिल्ली पहुंच कर स्ट्रगल कर रहे अंकित ने बताया कि उनके साथ जो कुछ भी दिल्ली में हुआ इसने उन्हें ज्यादा बड़ी लड़ाइयों के लिए तैयार किया।

भारती सिंह को बेबी के साथ आ रहा है मजा लेकिन हर्ष लिम्बाचिया की उड़ी हैं रातों की नींद, बताया अपना हाल

नई दिल्ली। हाल ही में मम्मी-पापा बने भारती सिंह और हर्ष लिम्बाचिया आज कल अपना पैरेंटहुड एंजॉय कर रहे हैं। दोनों अपने बेबी बॉय की देखभाल में लगे हुए हैं। जिसे लेकर भारती और हर्ष ने अपना एक्सपीरियंस शेयर किया है। जहां भारती क तो मजे खत्म। मैं उन सबको बोल दूं कि अब ज्यादा मजा आ रहा है। वहीं पापा हर्ष की बात करे तो उन्होंने बताया है कि उनका बेटा अच्छा है लेकिन रात भर जगाता है। हर्ष ने शो 'खतरा खतरा खतरा' के सेट पर पैपराजी से बच्चे और भारती के बारे में

भारती सिंह ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर प्रेगनेंसी के दौरान किए गए फोटोशूट की एक तस्वीर शेयर की है। जिसमें वह मरून कलर की ड्रेस पहने बहुत क्यूट लग रही हैं, इसके साथ ही उन्होंने एक इंट्रेस्टिंग कैप्शन लिखा है, जो मजेदार है और सबका ध्यान खींच रहा है। कॉमेडियन ने अपने मदरहुड के बारे में बताते हुए कैप्शन में लिखा, सब बोलते थे जब तक बेबी अंदर टमी में है, तो मजे कर लो। बेबी बाहर आया, बातचीत की। उन्होंने कहा, बेबी बहुत अच्छा है, रात रात जगा हर्ष ने बेबी के बारे में बात करते हुए आगे कहा, ठलोग कहते थे कि 'अरे बेबी होगा ना तो तुमको अलग ही फील आएगी' और मैं मान जाता था। लेकिन अब जब मैं महसूस कर रहा हूं तो मैं खुद बता सकता हूं कि हां ये एक अलग अनुभव है। ये बहुत ही अलग फीलिंग है। बच्चे को देखना अपने आप में एक मेडिटेशन जैसा है।

मंदाना करीमी का एक नामी डायरेक्टर संग था सीक्रेट अफेयर, प्रेग्नेंट होने पर एक्ट्रेस का किया ये हाल

नई दिल्ली। कंगाना रनोट के शो 'लॉक अप' के कॉन्सेप्ट के अनुसार शो में टिके रहने के लिए और ट्रॉफी के करीब पहुंचने के लिए हर कंगना रनोट को भी इमोशनल कर दिया। शो में मंदाना ने उस वक्त के बारे में बताया जब उनका अपने पति से सेपेरेशन हो गया था और उसने मेरे लिए सब कुछ बहुत ही खराब कर दिया ष्ठ अब इसके आगे क्या हुआ, इसके बारे में तो एपिसोड देखने के बाद ही मालूम

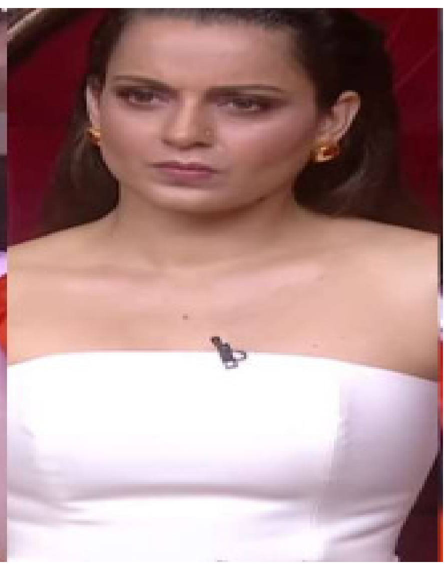

कंटेस्टेंट को अपना सबसे चौंकाने वाला सीक्रेट शेयर करना पड़ता है। इस हफ्ते यह मौका मंदाना करीमी, पायल रोहतगी, सायशा शिंदे और शिवम शर्मा को मिला था। बजर राउंड में यह मौका मंदाना करीमी को मिला, क्योंकि उन्होंने सबसे पहले बजर दबाया। इसके बाद उन्होंने अपने सबसे गहरे राज से पर्दा उठाया। इस हैरान कर देने वाले सीक्रेट ने शो के सभी कंटेस्टेंट, यहां तक कि होस्ट वह अलग रह रही थीं। इस दौरान वह एक नामी फिल्म डायरेक्टर के साथ रिलेशनशिप में थी। मंदाना ने कहा, ङ्खउस समय जब मैं अपनी पूरी स्थिति से, अपने सेपेरेशन से जूझ रही थी, मेरा एक सीक्रेट अफेयर था। मेरा रिश्ता एक बहुत ही जाने-माने डायरेक्टर से था, जो महिलाओं के अधिकारों की बात करता है। वह कई लोगों के लिए एक आदर्श है। हमने एक प्रेगनेन्सी प्लान की ष्ठ और जब यह हुआ, तो होगा। शो के जारी प्रोमो में सिर्फ इतना ही बताया गया। अपने सीक्रेट को बताते हुए मंदाना अपनी भावनाओं पर काबू नहीं रख पाई और फूट-फूट कर रोने लगी। उनके साथ ही शो के सभी कैदी भी इमोशनल हो गए। यहां तक कि होस्ट कंगाना के लिए भी उनके आंसू रोक पाना मुश्किल हो गया और वह भी अपने आंसू पोछते नजर आईं। आपको बता दें कि मंदाना करीमी ने जनवरी 2017 में बिजनेसमैन गौरव गुप्ता से शादी की थी। शादी के पहले दोनों दो साल तक रिश्ते में रहे। लेकिन शादी करने के कुछ महीनों बाद ही दोनों अलग हो गए और मंदाना ने गौरव व उनके परिवार के खिलाफ घरेलू हिंसा का मामला दर्ज करा दिया। बीते साल ही दोनों का तलाक हुआ है।

कार्तिक आर्यन ने शेयर की मॉरीशस शेड्यूल की तस्वीर, कहा- 'शूट का ये वीक शानदार रहा'

नई दिल्ली। अभिनेता कार्तिक आर्यन इन दिनों मॉरीशस में अपनी आगामी फिल्म शहजादा के शेड्यूल की शूटिंग कर रहे हैं। अब उन्होंने मॉरीशस से अपने इंस्टाग्राम पर एक तस्वीर साझा की है, जिसमें मुस्कुराते हुए पोज दे रहे हैं। फोटो में रोहित धवन व्हाइट कलर की टी-शर्ट पहने दिख रहे हैं, तो कार्तिक आर्यन सफेद कलर की शर्ट में नजर आ रहे हैं। इस फोटो को इंस्टाग्राम पर शेयर कर अभिनेता ने लिखा, हफ्ते लंबा हो सकता है। रोहित धवन के निर्देशन में बन रही इस फिल्म में कार्तिक आर्यन और एक्ट्रेस कृति सेनन लीड किरदार में नजर आने वाली हैं। शहजादा में कार्तिक आर्यन के अलावा परेश रावल, रोनित

वो फिल्म निर्देशक रोहित धवन के साथ नजर आ रहे हैं। इस तस्वीर में कार्तिक सेल्फी लेते हुए दिख रहे हैं, जबकि रोहित उनके साथ इस आदमी से समुद्र तट पर मिले और कुछ स्टफ फिल्माने का फैसला किया। मॉरीशस शूट पर शानदार हफ्ता उनका ये शेड्यूल लगभग 2 रॉय और मनीषा कोईराला भी अहम किरदार निभा रही हैं। कार्तिक आर्यन और कृति सेनन अभिनीत ये फिल्म साउथ के सुपरस्टार अल्लू अर्जुन और पूजा हेगडे की तेलुगु फिल्म आल्हा वैकुंठपूर्मुलु का रीमेक है। ये कार्तिक आर्यन की ये फिल्म 4 नवंबर, 2022 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी वहीं, बात अगर कार्तिक आर्यन के वर्कफ्रंट की करें तो वो इस साल बैक-टू-बैक कई फिल्मों में नजर आने वाले हैं। वो जल्द ही वो जल्दी ही हॉरर-कॉमेडी फिल्म 'भूल भुलैया 2' में नजर आने वाले हैं। इस फिल्म में उनके साथ अभिनेत्री कियारा आडवाणी, परेश रावल, राजपाल यादव के साथ नजर आने वाले हैं। फिल्म का निर्देशन अनीस बज्मी कर रहे हैं। ये फिल्म साल 2009 में आई अक्षय कुमार की फिल्म का सीक्वल है। इसके अलावा वो जल्द ही शशांक घोष के निर्देशन में बनी रोमांटिक थ्रिलर फिल्म 'फ्रेडी' में अभिनेत्री पूजा बेदी की बेटी आलया फर्नीचरवाला के साथ मुख्य किरदार में नजर आने वाले हैं। साथ ही कार्तिक 'कैप्टन इंडिया' और 'लुका छुपी 2' में नजर आने वाले हैं। उन्हें आखिरी बार नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई फिल्म 'धमाका' में देखा गया था।

अमिताभ बच्चन ने अजय देवगन को नियम तोड़ने वाल बताकर किया ट्रोल, फिर एक्टर ने बिग बी को दिया ऐसा जवाब

नई दिल्ली। अमिताभ बच्चन और अजय देवगन इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म 'रनवे 34' को लेकर सुर्खियों में बने हुए हैं। बीते दिन ही फिल्म का नया पोस्टर रिलीज किया गया था। जिसमें दोनों ही अभिनेता दमदार लुक में नजर

आ रहे हैं। इस बीच सोशल मीडिया पर एक्टिव रहने वाले अमिताभ बच्चन अजय देवगन की पुरानी तस्वीर ट्वीट कर उनका मजाक उड़ाते नजर आए। लेकिन अयज देवगन भी पीछे नहीं हटे और उन्होंने शहंशाह के इस ट्वीट का मजेदार जवाब दिया और अपना बदला ले लिया। दरअसल, शनिवार को अमिताभ बच्चन ने अजय देवगन की उनकी फिल्म 'फूल और कांटे' से एक फोटो शेयर की, जिसमें वे दो बाइक के बीच खड़े हैं और बैलेंस बनाते नजर आ रहे हैं। फोटो को शेयर करते हुए अमिताभ बच्चन ने कैप्शन में अजय को 'नियम तोड़ने' वाला बताया और उन्हें ट्रोल करते नजर आए। बिग बी ने तस्वीर के साथ कैप्शन में लिखा- 'सर जी इनका रिकॉर्ड ही है नियम तोड़ने का। रंगे हाथों गिल्टी पाए गए हो अजय देवगन। अब क्या दोगे इसका जवाब अमिताभ बच्चन के इस ट्वीट का जवाब अजय ने बहुत ही मजेदार अंदाज में दिया और अपने सेंस ऑफ ह्यूमर से लोगों को इंप्रेस करते नजर आए। अजय ने अमिताभ बच्चन और धर्मेंद्र की आइकॉनिक फिल्म 'शोले' से उनकी एक तस्वीर शेयर की, जिसमें वह बाइक चला रहे हैं और धर्मेंद्र उनके कंधे पर बैठकर हार्मोनिका बजा रहे हैं। यह तस्वीर अजय ने शोले के फेमस गाने 'ये दोस्ती हम नहीं तोड़ेंगे' से लिया। फोटो शेयर करते हुए अजय देवगन ने अमिताभ को छेड़ते हुए लिखा- 'सर, ये आप कह रहे हैं। अमिताभ और अजय की ट्विटर पर चल रही इस मजेदार बातचीत ने नेटीजन्स को खूब एंटरटेन किया। यहां तक कि अभिनेता अभिषेक बच्चन भी अपनी हंसी नहीं रोक पाए और कमेंट करते हुए उन्होंने लिखा- 'हाहाहाष्ठ ये मजाक शानदार है।' इनके अलावा एक्ट्रेस रकुलप्रीत सिंह ने भी अपनी प्रतिक्रिया दी और लिखा- 'हमेशा की तरह कैप्टन विक्रांत अपने खेल में शीर्ष पर हैं।बतो दें कि रनवे 34 में अमिताभ बच्चन और अजय देवगन के साथ रकुलप्रीत सिंह भी अहम भूमिका में है। जो ईद के मौके पर 29 अप्रैल, 2022 को रिलीज होगी।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा0 दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज। (उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।